मूल्य रु. ५-००
मासिक

श्री स्वामिनारायण

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख ० सलंग अंक १३२ अप्रैल-२०१८

श्री हरि जयंती
रामनवमी

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) स्वयं के ७५ वें जन्मोत्सव प्रसंग पर श्री नरनारायणदेव की आरती उतारते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री । (२) जेतलपुर मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी के अन्नकूट दर्शन तथा नयी पुस्तका का विमोचन करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री । (३) अंबापुर – गाँधीनगर मंदिर की पुनः प्रतिष्ठा के अवसर पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुए पू. महाराजश्री तथा पू. महाराजश्री की आरती उतारते हुए यजमान परिवार । (४) कांकरिया मंदिर में मारुति यज्ञ । (५) केनेडा टोरेन्टो मंदिर में बाल सत्संग युवा कैम्प । (६) कासिन्द्रा मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए संत लोग ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ११ ● अंक : १३२

अप्रैल-२०१८

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	श्री सुरवशैयाजी	०६
०४.	हे केशव दुःख दूर करो	०८
०५.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद में से	१०
०६.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१५
०७.	सत्संग बालवाटिका	१७
०८.	भक्ति सुधा	२०
०९.	सत्संग समाचार	२३

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत
स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अस्मदीयम्

समस्त सम्प्रदाय के आश्रितो वर्तमान समय में जीवन के लिए अति अनिवार्य-अमूल्य जिसकी अनुपस्थिति में कोई जीव जीवित नही रह सकता ऐसे जल का सावधानी पूर्वक प्रयोग करना चाहिए। अनावश्यक व्यर्थ नहीं होने दे। अपने घर में प्राय: नल से पानी बहता रहता है। उसे रोकना चाहिए। अपने गुजरात प्रदेश में इस वर्ष पानी का अधिक संकट है। बड़े-बड़े डेमो (जलाशयो) में २५% से ३०% जल ही बचा है। घर में जलका उपयोग आवश्यकतानुसार ही करें। यह भी श्रीहरि का एक आदेश है।

आज हम वचनामृत में ''घमंड'' उपर सुंदर उपदेश को सुनेगे।

''घमंड, ईर्ष्या और क्रोधये तीनो दोष तो काम से भी खराब है। क्योकि कामी के उपर तो संत दया करे भी लेकिन घमंडी के उपर नही। धमंड से ईर्ष्या और क्रोधपैदा होता है। लोग धमंड से सत्संग से दूर हो जाते है एसे काम से नही हटते है। क्योकि अपने सत्संग में कई हरिभक्त है वे सत्संगी है। इस लिए ये धमंड, ईर्ष्या और क्रोधसे दूर रहते है और हमारे जो भी लेख है उसमें इसको महत्व नहीं दिया गया है। आप सोचकर विचार करें। भगवान के महात्म को समझकर धमंड का परित्याग करना चाहिए।'' (ग.अं.-२६)

संपादकश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

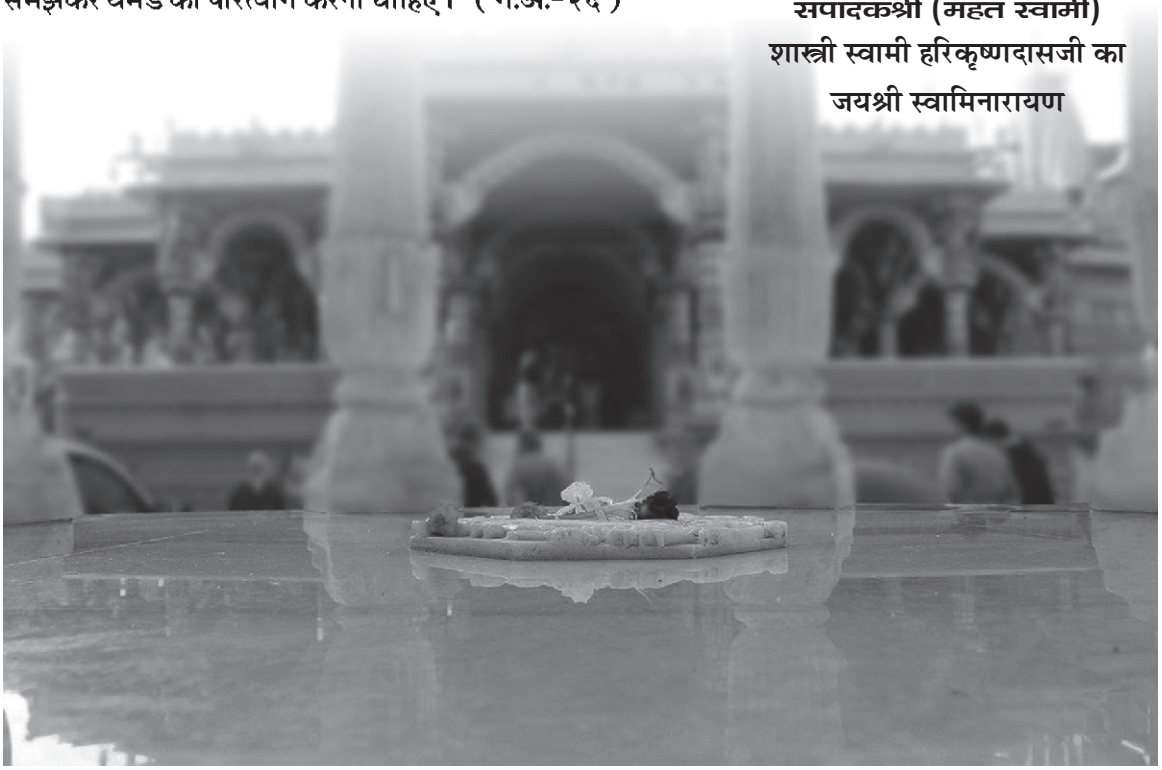

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मार्च-२०१८)

१-२ श्री स्वामिनारायण मंदिर मांडवी (कच्छ) रंगोत्सव के अवसर आगमन।

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर परमकृपालु श्री नरनारायणदेव को स्वर्ण जडित मुकुट अर्पण विधिस्वयं के शुभ सानिध्य में प्रसादी सभा मंडप में पूर्ण हुई । तत्पश्चात श्री नरनारायणदेव जयंती फुलोत्सव के अवसर पर रंगोत्सव मनाया गया।

४ श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी (बापूनगर) मूर्ति प्रतिष्ठा स्वयं के कर कलमो द्वारा विधिवत रुप से पूर्ण किये।

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनो के लिए) रामपरा (ता. वढवाण - मूली देश) मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर आगमन।

८ श्री स्वामिनारायण मंदिर अंबापुर (जि. गाँधीनगर) पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा के अवसर पर आगमन।

९ श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर पाटोत्सव के अवसर पर आगमन।

१०-११ मुंबई धर्मकुल आश्रित सत्संग मंडल वाली (राज.) द्वारा आयोजित सत्संग सभा में आगमन।

१३-१९ अमेरिका (आई.एस.एस.ओ.) सत्संग प्रचार हेतु धार्मिक प्रवास।

२१-२२ श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) कथा, पारायण यज्ञ के अवसर पर आगमन और कच्छ के गाँव में मूर्ति प्रतिष्ठा और पर आगमन।

२२-४ अप्रैल, न्युझीलेन्ड और ओस्ट्रेलीया के धार्मिक प्रवास हेतु आगमन।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा (मार्च-२०१८)

३ श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर परमकृपालु श्री नरनारायणदेव को स्वर्ण जडित मुकुट अर्पण विधिस्वयं के शुभ सानिध्य में प्रसादी सभा मंडप में पूर्ण हुई । तत्पश्चात श्री नरनारायणदेव जयंती फुलोत्सव के अवसर पर रंगोत्सव मनाया गया।

९. श्री स्वामिनारायण मंदिर जेतलपुर पाटोत्सव के अवसर पर आगमन।

२५ रामनवमी - श्रीहरि प्रगटोत्सव अक्षर भुवन बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज का षोडशोपचार महाभिषेक स्वयं के हाथो द्वारा विधीवत पूर्ण किये।

श्री सुरवशैयाजी

- साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

वैष्णव परम्परा की पूजा विधिके आधार पर अपने सम्प्रदाय में पूजन परम्परा के बारे में तीन प्रकार बताये गये है । (१) घर मंदिर (२) हरि मंदिर चित्र प्रतिमा युक्त । (३) शिखर युक्त अर्थात् बड़े मंदिर इन तीन प्रकार के मंदिर की मूर्ति धर्मवंशी आचार्य महाराजश्रीने प्राण प्रतिष्ठा किये हो अथवा उनके द्वारा स्वयं दी गयी हो । ऐसे स्वरुप की पूजा कराना शिक्षापत्री श्लोक ६२ में अपने ईष्टदेव श्री सहजानंद स्वामीजीने स्पष्ट आज्ञा दिये है । इसके अतिरिक्त स्वरुप को हिन्दु भागवत धर्म के नियमानुसार प्रणाम करना योग्य है । शिक्षापत्री का यह नियम सम्प्रदाय के आश्रित तथा सम्प्रदाय के मंदिर के लिये अति आवश्यक है । लेकिन चारधाम, सातपुरी, स्वयंभू तीर्थो के पूजा में लागू नही होता है ।

(१) घर में मंदिर घर के ईशान भाग में अथवा जहाँ पर मर्यादा की रक्षा हो उस भाग में पूजा करना चाहिए । मूर्ति की स्थापना अपने नाभि से उपर होना चाहिए । समयोचित समय पर आरती, धूप, दिपक, नैवैदी जागरण तथा शयन कराना चाहिए । जब कभी घर से बाहर जाना हो तो प्रभु सेवदन करना चाहिए कि जब तक हम वापस न आये आप की सेवा से दूर हो जाय तो आप क्षमा करियेगा । पर्दा लगाकर, जितने दिन भी बाद आये, सर्व प्रथम भगवान की घंटी बजाकर जगाकर आरती ईत्यादि स्नान करके करना चाहिए । वर्तमान समय में गाँव के हरिभक्त शहर में आते है जिससे यह संयोग अधिक बनता है । घर पर पूजा करने में हरि भक्त द्विविधा में आते है । इसमें गाँव की मूर्ति को वहाँ पर रखकर स्थानात्तरण करना चाहिए । यदि स्थायी रुप से या घर बेचने की स्थिति में मूर्ति को नये घर में बिराजित करना चाहिए । यदि गाँव के घर का उपयोग त्यौहार पर करे तो भगवान की मूर्ति यथावत रखना चाहिए । क्योंकि मूर्ति रहित घर में भूत-प्रेत का प्रवेश हो जाता है ।

(२) चित्र प्रतिमा स्वरुप को हरि मंदिर कहा जाता है । यह नाम रामायण काल से प्रयोग में हे । गोस्वामी तुलसीदासजीने लंका में विभीषण के घर को हरिमंदिर के नाम से सम्बोधित किये है । क्योंकि वहाँ वराह भगवान की मूर्ति स्थापित करके प्रतिदिन पूजन-अर्चन होता है ।

हरि मंदिर में प्रतिदिन सेवा धूप-दीप, आरती, जागरण शयन इत्यादि आवश्यक है उसे पूजा रहित रखना अपराधतथा उसका प्रायश्चित करने का विधान है।

शिखर युक्त महा मंदिरो में शास्त्र में वर्णित नियमुसार प्रमाण में अर्चना विग्रह स्वरुप का होना चाहिए तथा मंदिर का गर्भ गृह उचित माप शिखर शास्त्र अनुसार दिशा की सूचकता, माप के अनुसार द्वार, मेत्र की उचाई प्रमाण में मंडप प्रदिक्षणा स्तम्भ शिखर-चोटी, कलश, ध्वजा आदि मापनुसार एवम् अखंडित होना चाहिए । प्रातः कालीन (ब्रह्ममूहुर्त) की प्रथम मंगला आरती श्रृंगार का पूजन, राजभोग पूजा

निवेदन, संध्या पूजन तत्पश्चात शयन कक्ष में श्री महाप्रभु शयन करने जाते तो उश समय सम्पूर्ण पूजा करना चाहिए।

आज इस अंक में विशेष लिखा गया है कि हमारे शिखयुक्त मंदिर में ''सुखशैया'' के रुप में दर्शन करते है उसकी शास्त्र युक्त पम्परा महात्म समझना आवश्यक है।

श्री सुखशैयाजी श्री महाप्रभुजी का शयन कक्ष है। उसमें उचित रुप से पलंग, मसलन, गद्दी, तकिया तथा बिझौने ऋतु अनुसार रखे जाते है। दिन भर उस पर चित्र प्रतिमा रखकर पलंग, मसलत के रुप में श्रीहरिके अंग स्वरुप भक्तो को दर्शन कराया जाता है। जो भक्तो को भगवान के निकटतम स्वरुप में लीन होने का सुख प्रदान करती है। ऐसे भक्तो को पलंग रुप, मसलन रुप, तकिया रुप, विछौने रुप छपर रुप, जल रुप, विजंनरुप में बिराजित रह कर उत्तम प्रकारी की सेवा का लाभ प्राप्त करते है। निज मंदिर के गर्भ गृह में भगवान के रुप का दर्शन मिले और श्री सुख शैया में उत्तम सेवा के अनुरागी मुक्तो का दर्शन होता है। तथा बाजोट पर (पीठाः चांखडिया रखकर ऐसी भावना की जाती है कि भगवान शयनकक्ष में बाहर आये तो काखडी पहनकर आये, जब सोये तो पीढे पर रखखर पलंग पर शयन करे। सभी सत्संगीयो को ज्ञात ही है कि सुबह की मंगला के समय सर्व प्रथम श्री सुखशैया का उत्थापन किया जाता है। क्योंकि ठाकुरजी शयन खंड से जागकर निज गर्भ गृह में आते है तथा शयन आरती से पूर्व श्री सुखशैयाजी का द्वार बंदर दिया जाता है। भगवान शनय वस्त्र धारण करके शयन खंड में आते है और बाद में रात्रि गीत गाया जाता है। राजाधिराज अनंत कोटी के ब्रह्मांड के अधिपति प्रतिदिन शनय कक्ष में शयन करते है। उनका दर्शन सभी पापो को नष्ट कर देता है। जैसे गर्भगृह के स्वरुप को साष्टांग प्रणाम करते है वैसे ही श्री सुखशैया में मुक्तो को भी दण्डवत प्रणाम करना चाहिए।

सुबह-शायं धूप दीप नैवेद्य जल इत्यादि श्री सुखशैया में भी करना होता है। हरि मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के समय संक्षेप सेवा का संकल्प करने से मंदिर में शयन खंड अर्थात् श्री सुखसैया की व्यवस्था नही रखी जाती है। इसके अलावा की मंदिर में छोटी पलंग प्रतीक रुप में रखकर सेवा करते है। उसमें लालजी रुप का शयन कराते है।

बड़े शिखर युक्त मंदिरो में श्री सुखशैया के पलंग में भगवान की सोने का स्थान होने के कारण अन्य कोई समान क्यो नही भगवान के उपयोग की भी हो तो उसे वहाँ नहीं रखते है। मात्र चित्र प्रतिमा के रुप को रखते है। शांति से शयनकर सके ऐसा पलंग, उस पर अच्छा नरम गद्दा, उत्तम तकिया, गुलमप्रदा और पंखा रखा जाता है। सुख शैया में ठाकुरजी दोपहर और रात्रि में सोते है। ऐसा आस्तिक और प्रगत भाव रखकर दर्शन-सेवा करना चाहिए।

प्रातः काल ब्रह्म मुहूर्त में श्री सुखशैया के सामने प्रणाम - दंडवत करना और प्रभातिया (भोर के गीत) गाना चाहिए। पूजारीश्री शयन खंड ऐसे श्री सुखशैया को सर्व प्रथम उत्थापन करना होता है मंदिरो में अवश्य होनी चाहिए। उस पूजा के प्रकार प्राण प्रतिष्ठा के समय धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री जैसे सेवा के प्रकार का संकल्प किये तथा उसी प्रकर सेवा विधिकी अनुसकरण करना आवश्यक होता है। सेवा विधी में परिवर्तन की पूरी सत्ता एवम् जिम्मेदारी धर्मवंशी आचार्य महाराजश्री की ही है।

शयन आरती के बाद नंद संतो द्वारा रचित पोढणीया श्री सुख शैया के सामने खड़े होकर गाते है। शयन खंड श्री सुखशैयाजी का दर्शन तो बहुत भाग्यशाली हो उसे मिलता है।

सद्गुरु प्रसादानंद स्वामी कृत श्री स्वामिनारायण विचरण लीलामृत उत्तरार्ध-विभाग विश्राम ९९ में लिखा है कि श्रीजी महाराजने गोपालानंद स्वामी को आज्ञा किये है कि हम जो शिखर बद्ध मंदिर बनाकर जिन-जिन मूर्तियो की स्थापना किये है और जो करेगे तथा आचार्य जहाँ-जहाँ शिखरब्धमंदिर बनाये वहाँ मूर्तियो के समीप हमारी सुखशैया रखनी है वहाँ पर हमारी चाखडी भी रखना तथा पाँचवे स्कन्धका गुटका (छोटी पुस्तक) दे रहे है उसी भी रखना है।

हे केशव दुःख दूर करो

– शा. स्वा. निर्गुणदासजी (अमदावाद)

केशवतापं हर हर मे ब्रह्मवन्तं । त्वां नमामि सदा भगवन्तं ।

(ध्रुवपदम्)

अरुण कमल लोचनहृतखं जनमानमहागुणवन्तं ।

नारायणहरिकृष्णमहेश सुकृतं सदसि कथयन्तं ॥ केशव....१

नीलजलदसमविग्रहचर्चितचन्दनमतिबलवन्तं ।

दीनदयाकर जय जयदेवं कुरु हृदि मम शमनन्तम् ॥ केशव....२

सदय हृदय दर्शय मुखपंकजमाशुमालामाहरन्तं ।

यष्टयासु मनसां ते भक्तवासं कुसुममुकुलगौरदन्तं ॥ केशव....३

किसलय कोमलतलमधिशोभं ध्यायत्यजस्त्रं हसन्तम् ।

तं चारुयन्मुनयः पादपद्मं मदनकदन भगवन्तम् ॥ केशव....४

नवघनधवलमृदुलवसनानि शिवेनवपुषाधरन्तम् ।

नयनानन्दमान्तरषन्नून् शमयझटितिदयाव ॥ केशव....५

कालाक्षरपृंप्रकृतिविराजं तरूणवारणगतिमन्तम् ।

शंकरौयस्यशिरसिसुकरौ तं तवधरममधृतिमन्तं ॥ केशव....६

कलितललितभूषणभवनस्त्वं भूवनत्रयेविलसन्तं ।

गोविन्दमेदयितोभवगाढं जननिहृदयनिवसन्तम् ॥ केशव....७

वृषकुलरविमण्डलभूषयन्तं वाममुखं रुचिमन्तम् ।

वासुदेवचेतसिमनुजानामधगणनिकरं दहन्तम् ॥ केशव....८

इति वासुदेवानन्दवर्णिविरचिताषटपदी ॥

आदि सद्गुरु वर्णीराज श्री वासुदेवानंद स्वामी स्वयं के इष्टदेव परब्रह्म परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारायण के श्री चरणो में हमेंशा प्रणाम करने मात्र से ही दयालु प्रभु जगत के जीवो का दैहिक, दैविक, भौतिक तीनो प्रकार के दुःखो को दूर करके अभर धाम की प्राप्ति कराते है । ऐसे दीनो के उपर दया करने वाले पमरेश्वर की कैसी सुंदर मूर्ति है । और उनका कैसा मधुर चरित्र है उसका प्रत्यक्ष दर्शन करके वर्णन करते है । ऐसे स्मृति अष्टक के शब्दो को समझें ।

केशवतापं हर हर मे ब्रह्मवन्तं । त्वां नमामि सदा भगवन्तं ।

(ध्रुवपदम्)

अनन्त कोटि ब्रह्मो के सर्जक तथा उसके नियन्त्रक और ब्रह्मस्वरुप ऐसे अक्षर मुक्तो से हमेशा धिरे हे केशव भगवान हमारे दिल से जन्म मृत्यु के कष्ट को दूर करे । हे प्रभु आप की शरण में रहकर सदैव आप के चरणो की वंदना करु अर्थात आप की आज्ञा में रहकर जैसी आप की ईच्छा हो वैसा आचरण करु । और हमेशा नम्रता से रहूँ ।

अरुण कमल लोचनहृतखं जनमानमहागुणवन्तं ।

नारायणहरिकृष्णमहेश सुकृतं सदसि कथयन्तं ॥ केशव....१

सुबह प्रात– सम यमें पूरव दिशा में उदित सूर्य के समान अरुण रंग के कमलत नेत्रो वाले, जिसकी सुन्दरता देखकर खंजन पक्षी का मान का मर्दन कर दे । ऐसे महान गुणो, दया, वात्सल्यस्नेह शुभ गुणो वाले सदैव उपस्थित रहते है । परमब्रह्म परमात्मा भगवान पुरुषोत्तम नारायण ऐसे हे प्रभु आप हरिनाम को धारण करके और कृष्ण नाम धारण करके उसी प्रकाश महेश नाम धारण करके जिस सत्कर्म करने का आदेश दिये है वह संतो की विशाल सभा में प्रतिदिन कथा करते है । ऐसे हे भगवान जीवो के त्रिविधकष्टो को दूर करिए इसलिए आप के चरणो का सदैव वंदन करता हूँ ।(१)

नीलजलदसमविग्रहचर्चितचन्दनमतिबलवन्तं ।

दीनदयाकर जय जयदेवं कुरु हृदि मम शमनन्तम् ॥ केशव....२

वर्षाऋतु के आषाढ मंहिने में धिरे मेघाम्बर के बादल जैसे समान घटा वाले आसमानी वर्ण धारण करने वाले

शरीर धारी ऐसे आप के भाल पर परमहंसो से सुगन्धित चंदन युक्त, जिससे विशाल भाल पर अति बलवान सूर्य के समान शोभायमान है। हे प्रभु आप की जयनाद पुकार ने वाले गरीबो के उपर दया करने वाले बलशाली है। ऐसे हे भगवान मेरे हृदय में से त्रिविधताप का नाश करके परमशांति प्रदान करते है। हे केशव भगवान जीवो के विविधकष्टो का विनाश करे उसलिये में आपके चरणों में आकर आप का वंदन करता हूँ।(२)

सदय हृदय दर्शय मुखपंकजमाशुमालामाहरन्तं।

यष्ट्यासु मनसां ते भक्तवासं कुसुममुकुलगौरदन्तं ॥ केशव....३

जीवों के उपर अति दयालु हृदयवाले हे स्वामिनारायण भगवान आप बड़े बडे अवसर पर आये भक्तो द्वारा अर्पित सुंदर सुंगधयुक्त पुष्पहार को स्वीकार करते है। तब बड़े भक्तों को समूह को देखकर अपने हाथ में लिये हुए स्वर्णमयी दण्ड से दूर खडे भक्तो का हार ग्रहण करते है। तब आपके कमल जैसे बिले मुख में सफेद दांत की पंक्तियो को देकर भक्त के हृदय सुखी हो जाते है तथा बस भी जाते है। इसलिये आपके चरणो की मैं वंदना करता हूँ।(३)

किसलय कोमलतलमधिशोभं ध्यायत्यजस्त्रं हसन्तम्।

तं चारुयन्मुनयः पादपद्मं मदनकदन भगवन्तम् ॥ केशव....४

परब्रह्म परमात्मा भगवान प्रभु आप का नवीन कमल दल जैसे कोमल चरणारविंद में पैर के नीचे सोलह प्रतीक अति शोभा प्रदान करते है। इसका सदैव परमहंस मुनि ध्यान करते है। तब उनको दिव्य तेज का दर्शन होता है। उस खुशी से मुख प्रफुल्लित होता है। और उनके हृदय में से भगवान करम इत्यादि आन्तरिक शत्रुओ का विनाश करते है। ऐसे ही केशव प्रभु आप जीवो के विविधकष्टो का नाश करते है। इस लिए आप के चरणों की वंदना करता हूँ। (४)

नवघनधवलमृदुलवसनानि शिवेनवपुषाधरन्तम्।

नयनानन्दमान्तरषत्रून् शमयझटितिदयाव ॥ केशव....५

हे श्रीहरि हरि देश-देशान्तर से आये भक्तो द्वारा अर्पित नये सुंदर स्वच्छ कपडो को जगत के कल्याण हेतु मानव शरीर उपर धारण करते है। तब दर्शनार्थीयो के नेत्रो को अति सुख पैदा होता है। और उनके हृदय से काम, क्रोध, मद, लोभ, आदि आन्तरिक शत्रु को हटाकर आप दया करते है। ऐसे हे केशव भगवान जीवों की विविधदुःखो को दूर करिए, इसलिए आपके चरणों की मैं सदैव वंदना करता हूँ।(५)

कालाक्षरपृंप्रकृतिविराजं तरूणवारणगतिमन्तम्।

शंकरौयस्यशिरसिसुकरौ तं तवधरममधृतिमन्तं ॥ केशव....६

पुरुष प्रकृति काल और अक्षर को भी धारण करने वाले अन्तर्यामी नियन्ता ऐसे प्रभु अति तीव्र गति से आगे बढती युवावस्था के अश्व पर विराजित होते हो। दब आप के दोनो कल्याणकारी हस्तमकल से माथे पर सुंदर सफेद पगडी को पकडे रहते है। ऐसे उच्च स्वरुप में धारित हस्तकमल मेरे बुद्धि में धैर्यपूर्वक सदैव याद रहता है। ऐसे हे केशव भगवान आप जीवो के त्रिविधकष्टो को नष्ट करते है। इसलिए आप के चरणों की सदैव वंदना करता हूँ। (६)

कलितललितभूषणभवनस्त्वं भूवनत्रयेविलसन्तं।

गोविन्दमेदयितोभवगाढं जननिहृदयनिवसन्तम् ॥ केशव....७

हे प्रभु अनेक कारीगरी से युक्त और लालित्पूर्ण सुंदर आभूषणो से पूर्ण अर्थात् सम्पूर्ण समृद्धि से पूर्ण ऐसा आप का निवास स्थल भवन रंग मंहल तीनो लोको में अति प्रसिद्ध है। ऐसे अति सुंदर रंग महल में जैसे सदैव प्रत्यक्ष प्रणाम में निवास करते है और माता भक्तिदेवी के हृदय में सदैव निवास करते है। इसी प्रकार के गोविंद प्रभु मेरे उपर दया करके भव बंधन मुक्त करिए। और अज्ञान रुपी अंधेर से दूर रखिए। ऐसे हे केशव भगवान जीवो के तीनो प्रकार के दुःख को दुर करें। इस लिये मैं आपके चरणों की सदैव वंदना करता हूँ।(७)

वृषकुलरविमण्डलभूषयन्तं वाममुखं रुचिमन्तम्।

वासुदेवचेतसिमनुजानामधगणनिकरं दहन्तम् ॥ केशव....८

स्वयं के कुल जो धर्मकुल के नाम से प्रसिद्ध है। उसका यश और कीर्ति सूर्य मंडल तक आप पहुचाये है। और मेरे (वासुदेवानंद वर्णी है) हृदय में से चिंता पैदा करने वाले कलियुग के कई पापो के समूह को जलाकर नष्ट कर देने वाले है। ऐसे हे प्रभु आप के वाये भाग में देखना और शयन अच्छा लगता है। है केशव आप जीवो की त्रिविधदुखो का विनाश करते है। इसलिये आप के चरणों की मै सदैव वंदना करता हूँ।(८)

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के आशीर्वाद में से

– संकलन : गोरधनभाई वी. सीतापरा (हीरावाडी–बापुनगर)

श्री नरनारायणदेव के १९६ के उद्घाटन अवसर पर, अहमदाबाद (कालुपुर) मंदिर ता. १८-२-२०१८ : फाल्गुन सुद-३ के दिन अपने सम्प्रदाय के लिए ऐतिहासिक और गौरव का दिन है कि सर्वावतारी श्रीहरि इसी दिन विश्व का सर्व प्रथम स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में स्वयं के स्वरुप श्रीनरनारयणदेव को ध्यान में लेकर बिराजित है। इसी दिन ही श्रीहरि के छठवें वंश प.पू. बड़े महाराजश्रीने सर्व प्रथम श्री स्वामिनारायण म्यूजियम बना कर सम्प्रदाय को भेट दिये। इसी शुभ दिन पर श्रीहरि का ७वाँ वंशज प.पू.ध.धु. आचार्य श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गद्दीवाले और पू.श्रीराजा के शुभ हाथो द्वारा मानवता का एक शुभ कार्य सम्प्रदाय में सर्व प्रथम 'आंगन' (अनाथ बच्चोका घर) का भूमि पूजन हुआ।

फंडदान या धन का संग्रह नही मात्र 'आंगन' के विज्ञापन मात्र से सभा में हाजिर मानवतावादी और प.पू. महाराजश्री के धर्मकुल की खुशी में खुशी मिलाने वाले निष्ठावान, कई भक्त उदारतासे दान दिये। दाताओ के उपर प.पू. महाराजश्री हृदय से काफी कुश होकर स्वंय के मुख से सभा में दाताओ का नाम बोलकर प्रत्येक को सम्मान दिये। तथा साथ ही साथ अमृत बचनो को बोलते रहे। भक्तचिंतामणि ग्रंथ मे स.गु. निष्कुलानंद स्वामी ने श्रीहरि के समकालीन हरिभक्तो का नाम लिखा है। इन नामो को पढ़कर पवित्र होते है। उसी तरह वर्तमान काल में ये सभी भक्त इस प्रगट भगवान के भक्त होने के कारण नाम पढने से पवित्र हो जाते है कि किन पूरा नाम न लिखकर प.पू. महाराजश्री के मुख से अमृत वचन साररुप में लिखता हूँ।

प.पू. महाराजश्री हम सब भाग्यशाली है कि सत्संग में उपस्थित अधिक लोगो को जानते है। ६०% को नाम से ४०% का नाम से जानते है। कईबार याद करने पर, पूछने पर, गाँव के नाम से सब कुछ ज्ञात हो जाता है। महाराजजीने मानवता के नींव पर यह सम्प्रदाय बनाया है। महाराज मनुष्य के अन्तर आत्मा को स्पर्श किये जाने कैसे ? माला पहनना, तिलक करके ध्यान लगाना ऐसी आज्ञा सीधे किसीने भी नही दिया है। सर्व प्रथम कुआँ खुदवाना, वाव, तालाब नाना अन्य क्षेत्र प्रारम्भ करना सही बात है न स्वामी ? (शा. स्वामी निर्गुणदासजी की तरफ देखकर) संप्रदाय में बड़े और ज्ञानी संत है। बात ऐसी है कि हम सभी को महाराजजीने चार जून खाना की व्यवस्था दी है। कभी-कभी पाचन के लिए पाचक दवा लेनी पडती है। लेकिन जिसे दो बेला भोजन नही मिल पाता है उसके लिए ये कार्य कर रहे है। इस कार्य के लिए आप ने दान दिया है उसका हिसाब हम सब आप को देगे। आवश्यकता से अधिक धन सम्भालना सिरदर्द होता है। अधिक हम रखते ही नही है। हिम्मतपुरा गाँव में जमीन, मंदिर युक्त २० लाख का **Estimation** था। विज्ञापन किया १९,९०,००० उपर का धन आग या इसके बाद दान लेना बंद किये। आप के मेहनत तथा पसीना का धन है। कुल खर्च के लिए आप का धन नही है। मैं पारदर्शीओ को मानता हूँ कुछ छिपाना नही चाहता, धन मेरा नही है। देवता का है, आप का है। और हम जिस मकान में रहते है वह मकान, ये कपडे, गाडी सभी देवका है। और यह श्वास जो लेते है वह भी देव का ही है।

आँगन के लिए जिस जमीन का सम्पदान हुआ है वह ४५० वह से अधिक है जिसका प्रतिवार मूल्य १ लाख रुपया से प्रारम्भ है। इसके लिए किसी से धन नही माँगा गया है। आप लोगोने जो दान पेटी में डाले है वही निराधार बच्चे-बच्चियो के लिए प्रयोग होगा। मानवता का यह बड़ा कार्य है और महाराज इससे खुश होगे। चेष्टा के पदो में हम लोग गाते है। कोईने दुखियो रे देखी न खमाय, दया आणी रे, अति आकला थाय अन्न धन वस्त्र रे, आपीने दुख टाले करुणा दृष्टि रे, देखी वानज वाले, सब कुछ इसमें आ गया। किसी को भी दुखी देखे, वह महाराजजी को बर्दाश्त नही होता है। ऐसा नही लिखा है कि सत्संगी दुखी हो तो आप मदद न करें। सेवकराम दुखी थे। महाराज उनकी सेवा करके शरीर ठीक किये थे। उनकी गठरी भी उढाये थे। उसके पास सोने की मुहरे थी लेकिन महाराज के लिए एक भी कौडी का प्रयोग नही किया था। अतत: महाराज उसे कृतध्न जानकर परित्याग किये थे ये वाद की बात है। पहले यह मनुष्य दुखी था तो महाराज इसको दु:खनही देख पाये।

दुखियों की सेवा का विचार काफी आया। सुझाव भी अधिक आये। वृद्धाश्रम की सलाह भी आयी लेकिन यह अपनी संस्कृति के विपरीत मानता हूँ। प्रत्येक को अपने माता-पिता, वृद्धोनी की सेवा करना शास्त्रो ने बताया है। अपने सम्प्रदाय में ऐसा है महाराजजी अपने साथ सिहासन मे स्वयं के माता-पिता धर्म भक्ति को विराजित किये है। यह क्या दिखाता है? इसके पश्चात भी किसी को आवश्यकता हो दुखी हो उसी सुविधा देना हमे आता है। लेकिन आँगन प्रोजेक्ट इस लिए है दो दिन का निर्दोष फूल जैसे बच्चे को कोई कचरापेटी में डाल दे उसमें उ सबच्चे का क्या पाप है? हिन्दूसमाज में कई ठग संस्था चलाते है। लालजी महाराज के साथ हम लोग ऐसे संस्थाओ में गये है। यथा योग्य मददभी देते है। बाद में निर्णय लिए हमारे पास सभी सुविधा उपलब्धहै क्यो न हम सीधे बच्चो को सम्भाले? हमारे पास नर्सरी से लेकर विश्वविद्यालय तक अपनी संस्था है। उसमें बच्चो को पढाकर प्रबन्धकरके तथा स्व निर्भर होगे। उनका भविष्य सुधरेगा और मानव धर्म का सिद्धान्त सुरक्षित रखेगा।

५ से ६ वर्ष पहले एक बार हम और लालजी महाराज, गादीवाला और श्रीराजा ऐसे एक अनाथ आश्रम में गये। वहाँ जाने पर पता चला दुख क्या होता है? अनुभव हुआ हम बहुत सुखी है। बाहर स्थिति खराब है। हुआ ऐसा पाँच वर्ष की एक लडकी गादीवाला की साडी का पल्लू पकड बोली आप मुझे अपने घर ले जाइए, आँख मे से पानी निकलने लगा। ये कोई दंतकथा या बनाई हुई बात नहीं है। सत्य बात है। गादीवालाने संकल्प किया इस कार्य को किये बिना छुटकारा नही है। हम बोले सुविधा होने पर कार्य करेगे। क्योकि उस समय स्थिति गम्भीर थी। बाद में महाराज की दया हुई, संकल्प पूर्ण हेतु कार्य किये आप लोगोने सहयोग दिया, धन्यवाद है। गम्भीरता से कहता हूँ मागूँगा नहीं जो देगे वह स्वीकार होगा। हम ऐसा मानते है कि किसी को एकबार में पूरा नहीं देना चाहिए। स्वयं के पैर पर खड़ा हो ऐसा करना चाहिए। प्रसंगानुसार १-२ बार लड्डू खिलाकर पूरा कर दे ऐसा नही प्रति दिन १ भाखरी देगे तो यह आप को याद रखेगा। तथा भगवान को याद करेगा। हमें भगवान ने निमित्त बनाये है। किसी जीव को थोडी हँसी दे सके, खुश कर सके उसके अन्दर में दृढता आयेगी। तो मंदिर की सीढियाँ चढना सार्थक होगा। सयोगवश किसी का दिल दुखाकर भूल से भी मंदिर की सीढीयाँ चढे है तो भगवान आप के सामने देखेंगे नही।

एकबार गर्मी के दोपहर में कच्छ से घुमकर हम अहमदाबाद आये ४७-४८ से. तापमान था। चौक पर एक ट्रैफिक हवलदार पानी के लिए परेसान था। हमारी गाडी में पानीक ा बोतल था। वह निकालकर उसे दिये। एक छोटी सी बात कितना प्रभावशाली हो जाती है। १० से १२ घंटे गर्मी में खडे रहकर ड्युटी करने वाली व्यक्ति तो भी मनुष्य है। मनुष्य एक दूसरे मनुष्य को देखना

सीखे यह आवश्यक है। इन सभी में अन्ततः भगवान को देखना सिखना होगा। किस में कितनी भगवान के प्रति श्रद्धा है कितनी मानवता है अपने को कहाँ पता चलता है ? इसलिए तत्काल कह देते है कि जाने दो। उसके साथ बात करना जैसी कोई बात नही है। यह अपनी सीमा है। कोई चोर चोरी करे तो एक सप्ताह उसे चोरी न करनी पडे। स्वयं के बच्चे को २ बेला की रोटी मिलता है। स्थायी चोर हो, कमजोर चोर हो, तो भी चोरी करता हो बाद में वह जाने ईश्वर जाने हमें उसमें भाग नही लेना चाहिए। बात इसलिए कर रहे है कि किसी को ऐसा लग रहा होगा कि सत्सग में क्या हो रहा है। कैसा है ? किस कारण से नया बवाल शुरु हुआ ? हाँ नया-नया बबाल हमें जरुर आता है लेकिन इनका अंत कही-कही ईश्वर से जूडा होता है। इस कारण से इस तरह का कार्य करते है। जीवराज पार्क के दान लाने पर प्रसंगोचित संस्मरण याद करते कहे कि ये बच्चे परिश्रमी है। रजत-स्वर्ण जयंती के समय ट्रावेल टैम्पो की सतह खिस डाला था। छड नही थे पतरे टूट कर अन्दर बैठ गेय थे बैठने पर सड़क दिखाई देती थी। उसमें भी १२ की क्षमता और ४० लोगो को भर कर ले जाना। १३-१४ वर्ष की उम्र में गाँवो में टहलने की आदत या कुआदत माने थी। गांव को मैं अपनी जड़ मानता हूँ। अपना ही रुप है। गाँव को पोषण मिले ये हमें अच्छा लगता है। इन संतो के साथ अहमदाबाद क्षेत्र का कोई ऐसा गांव नहीं है जहाँ हम नही गये हो। इसलिए हम इस टैम्पो में ४० लोग माइक, ढोल, नगारा लेकर जाते थे। ३२ वर्ष से धुमते थे। अब तो यह मंडल लालजी महाराज देखते है। विहार गाँव के लिए प्रसंग उचित कहा है विहार गाँव बडा है। और सत्संग में अग्रणी है। पिछले प्रसंग में हम नही आ सके। सारी, वर्ष में दो-तीन बार जाते है। छोटा बच्चा 'आंगन' के योगदान के लिए चिट्ठी लेकर आने वाला उसे हार पहना कर कहे ये लडका आया बहुत बड़ी बात है। ये अपना भविष्य है हमने चिट्ठी का आंकडा भी नही देखा लेकिन इस बच्चे को चिट्ठी के निमित्त ये सभा याद आयेगी और भगवान याद आयेगे। विश्व विद्यालय की नौकरी का पहला वेतन के योगदान के बारे मेंक हा कि 'इस के माता-पिता, बड़े तथा हितेषी संतो ने संस्कार का कैसा बीजारोपण किया होगा कि पहला वेतन देवो के सत्कार्य के लिए अर्पण कर दिया। नही तो पहेल वेतन का कितना जोश होता है। चेक आएगा कि नगद मिलेगा। धन्यवाद ! लुईवील के विष्णुभाईने १,५१,००० दिये। विष्णुभाई अधिक मेहनती और निष्ठावान है। लुईवील में डेढ़ हरिभक्त थे। डेढ अर्थात प्रणालिका अनुसार १ पूर्ण तथा दूसरे अर्धपूर्ण ! वहाँ पर आज २२ लाख डालर का मंदिर स्थित है। और सभा में ५०० आदमी एकत्र होते है। लगातार योगदान आता रहता है तब भी कहते है, यह लेने की सभा नही है। समाप्त करिए अब। उसी प्रकार बापूनगर के प.भ. रमेसबाई काछडिया के रुपया एक लाख के सहयोग की बात कहे कि, ये रमेशभाई बापूगनर में सेवा करते है। यहाँ भी सेवा करते है। उनका धर्मादा एकदम शुद्ध बिना किसी परेशानी का होता है। ये बात हमें अच्छी लगती है। दूसरी सेवा करे या न करे, उत्सव में भले ही एक रुपया न दे। लेकिन शिक्षापत्री में महाराज का आदेश है। देव की आज्ञा का पालन अवशय् करे। खुद का घर हो, स्वयं की गाडी या वाहन हो दो दशांश देना चाहिए। किसी के घर में रहते हो तो या किसी की गाडी में जाते हो तो देव के २० भाग का ध्रम कार्य में खर्च करना चाहिए। तो ही खुद की गाडी और् मकान होगा। ऐसा शास्त्र में लिखा है। कथा में सुने है। हम भी शास्त्र में से गृहकार्य करके रखे है।

राजस्थान के सोहनसिंह के ११००० आये। समय मिले तो कभी राजस्थान में धुमिएगा। हम वहाँ के प्रत्येक गाँव में ये है। १५ x १० या १५ x २५ के छोटे मंदिर और छोटे मूर्ति का दर्शन करते अन्दर से सुख मिलता है। वहाँ के हरिभक्तो का जो भाव है वह अद्भूत है। हमें अच्छा लगता है। हरिभक्तो के मुख पर हम जब मुस्कान देखते है तब नरनारायणदेव के मुखारविंद पर हमे मुस्कान दिखाई देती है। इतना रुपये प्राप्त करने में

उन्होने कितना परिश्रम किए होगे यह हमें ज्ञात है । धन्यवाद ! हमें गर्वे है कि सम्पूर्ण गुजरात के पश्चात् राजस्थान, मध्यप्रदेश और यू.पी. के हरिभक्त है इतना ही नही संत भी है । महाराज के संत मराठी में बोलते है । सांख्ययोगी बहनो की तरफ से योगदान अच्छा था । अपने संप्रदाय में सांख्ययोगी बहने व्यवहार कर सकती है और संप्रदायकी सेवा भी अच्छी करती है।

कम धन में भी कितने कार्य हो जाते है । उसका उदाहरण दे तो अभी निवृत्त तीन अधिकारी हमारे पास कार्यालय में आये और कहने लगे हम लोग राजकोट के फालाणा गाँव से आये है । गाँव में ३०० वर्ष पुराना राधा-कृष्ण का मंदिर था । मंदिर प्राचीन और रह नही सके ऐसा हो गया है । हमने मंदिर का जीर्णोद्धार करके राधा-कृष्ण को विराजमान किया है । दरवाजा, बारी, खिडकी का कलर रुका हुआ है । हम लोग अपने पेन्सन से धीर-धीर कार्य पूर्ण करेगे । हम बोले, आप काम पूरा करवाइए । बिल हमारे पास भेज दीजियेगा । हम वहाँ गये, शाकोत्सव किए । ३५ घर पर जाकर पधरामणी किये ७२०००/- में मंदिर का काम पूर्ण हो गया । आज उस मंदिर में ६०० आदमी आते है । आप के पैसा का चेक डायवर्ट करके उस गाँव को दिये थे इससे सत्संग अच्छा हो गया ।

भक्तिभाई कुकरवाडा का योगादन-लुनावाणा के युवक मंडल ने अभी झोली किये ये क्यो ? २ वर्ष की बच्ची कैसर से सुरक्षित हुई । भगवान करे स्थायीरुप से स्वच्छ रहे । आप सभी पाटोत्सव मे देव दर्शन हेतु, कथा सुनने, काफी दूर से आये है । इससे पता चलता है कि देव की महिमा का आप को ज्ञान है, देव के सानिध्य में बैठना यदि पर्याप्त है । आप आकर यहाँ बैठे यह दिखाता है कि आप का भगवान के प्रति संतो-हरिभक्तो और मंदिर के प्रति अपनापन और लगता है।

महाराज नये-नये मंदिरो में प्रतिष्ठा करके अपने को देव प्रदान किये है । प्रसादी के चरणारविंद की एक झलक नही मिलती है । प्रसाद का खेश जिस कारण धागा भी किसी को नही मिलता है । जब कि अपने म्यूजियम में दर्शन करिए तो आप को ज्ञात होगा कि महाराजने आप को क्या नही दिये है । बात यह है जो अपने पास है, वह किसी के पास नहीं है । पिछले १०-१२ वर्षो के मध्य कम से कम ३२५ नरनारायणदेव के प्रभुत्व के अन्दर दस्तावेज किये गये है । दस्तावेज न होने पर मंदिर की क्या सुरक्षा ? भविष्य क्या ? गाँव में पुरानी पंचायत लेख में मात्र इतना ही लिखा होता है । स्वामिनारायण मंदिर मानकुवा, स्वामि. मंदिर डांगरवा, लूणावाडा, बालवा इत्यादि, मानले इस गाँव से भविष्य में निष्ठावान भक्त स्थानांतरित होकर दूसरी जगह रहने लगे । दूसरे की बहुमति और मंदिर कब्जा कर ले तो ? इस कारण से अब हम लोग दस्तावेज वगैर मंदिर उस मंदिर में किसीकी मूर्ति रखना है उसके स्पष्टता बिना प्रतिष्ठा की तारीख हम किसी को नही देते है । स्वामिनारायण मध्य में हो इसके साथ महाराज अहमदाबाद-भुज में नरनारायणदेव, मूली में राधाकृष्णदेव स्वयं स्थापित किये है । उस विस्तार में इन देवो का रहना आवश्यक है । महाराज के अवतार, पंचदेवो का रहना हमे स्वीकार है । महाराज से उपर होकर किसी का खंडन करने का अधिकार किसी के पास नही है । किसी गाँव में दो ही हरिभक्त हो और मंदिर बनाना हो तो हमारी आफर है । कालूपुर मंदिर से जमीन संपादित करादेगे । चेक भी ले जाइए । दस्तावेज नरनारायणदेव का होना चाहिए।

फरवरी महीने के अपने स्वामिनारायण मासिक अंक का अन्तिम पृष्ठ अवश्य देखिएगा । डांगरवा (वांटो) मंदिर को अमदावाद मंदिर के साथ संलग्न करने के लिए चैरिटी कमिश्नरश्री का आदेश की छाया प्रति मुद्रित है । उस मंदिर को उखाडकर अहमदाबाद नही ला सकते है । लेकिन भविष्य के लिए कही अपनी चौथी पीढ़ी मंदिर कही और न ले जाय उस ध्येय से कार्य किया जा रहा है । आप और हम कही जाने वाले नही है चौथी पीढ़ी की गारन्टी कौन लेगा ? शेष हमें जितना ही

दस्तावेजी मंदिर कोई संख्या जिनती अधिक होगी । उतना ही एकाउन्ट, ओडिट मेनटीनेन्स इत्यादि का कार्य बढ जाता है । हनुमानजी जैसे बड़े होते है उनकी पूछ भी मोटी होता है न । लेकिन ये देव है इसी से हम बनेगे और आवश्यक भी है ।५-७ पीढ़ी पहले महाराजने और अपने वृद्धोने इस मंदिर को देव के नाम पर किया था तो ही आज अपने यहाँ बैठे है । अंग्रेज सरकारने ११ वर्ष के लिए भाडा पट्टे पर पहले जमीन दी थी । महाराज बोले, हमें यह कार्य नही करना है हमे तो जब तक सूर्य-चन्द्र में प्रकाश रहे वहाँ तक का दस्तावेज चाहिए । आज हमें पाके स्वामिनारायण वाला कहते है तो अपने भगवान तो पक्के ही होगे ही । यहाँ के लोगो का शासन नही था । कागज लंडन गया । वहाँ से रानी की हस्ताक्षर और सिक्कालगा कर आया । इस कारण से आज आमने सामने बैठे है । सुरक्षा पहले ! पिछली मीटींग में १२ जितने मंदिर स्वतंत्र संचालित थे उनका विलीनीकरण की तैयारी पूर्ण हो चुकी है । कोटा इत्यादि मंदिर का ५ करोड का प्रोजेक्ट चालू है । ये सब देव पूरा करते है । हमें कोई लालच नही कि हमें २ करोड की सम्पत्ति में हाथ डाले । हमे इतना ही रस है कि प्रोपर्टी देव की होगी तो सुरक्षित होगी । और अपने पास देव की ७५० करोड की सम्पत्ति है ।

आप देखो अपने मंदिर के सामने दूसरे मंदिर बने है कि नही । कोई गाँव नही दिखाई देता उन्हें । डांग में जाये । आपको न जाना हो तो हम जायेगे हमारी तैयारी है । भगवान और धर्म के नाम पर क्यो प्रतिस्पर्धा कर रहे है । भगवान के सामने दूसरे भगवान कैसे हो सकते है । किस प्रकार का यह संसार है कि देखा देखी कर देते है । परिवार और भाईयो में झगड़ा करवाये ऐसे भगवान और सम्प्रदाय में नही मानता हूँ । हमारे भगवान जाति भेद नही देखे है । हमारे भगवान सगराम के कोख में जाकर बैठे है । बात इतनी है कि अपनी सम्पत्ति स्वयं क्लीयर रखते है । क्यो नहीं पडोशी के नाम कर देता है ? दस्तावेज का कोई काम बाकी हो तो नींद आती है ? दुकान-मकान के कागज क्लीयर हो जाने के बाद टैक्स भरना पडता है । तो देव का कागज क्लीयर नही होना चाहिए। यह चिंता हमें अवश्य करना चाहिए ।

हमारा व्यक्तिगत टैक्स रीटर्न आप खोज कर देख सकते है । मकान, गाडी, डीजल सब देव का है । हाईवे पर बोनेट के उपर बैठकर भोजन किये है । लेकिन उसकी हमें चितां नहीं है । पैसा का कोई असर हमारे उपर नही है । देव के अलावा सब डीलिट कर देते हैं . मोबाईल में डीलिट बहन देखे है न । नारायणघाट मंदिर से राम स्वामी का समाचार है कि वहाँ मंदिर में प्रति रविवार सुबह ११ बजे से दोपहर २ बजे तक कोई भी व्यक्ति आये । चाहे पैदल आये, सायकिल से आये, मर्सीडीज या रोल्सरोय गाडी में आये या हेलिकाप्टर से आये प्रत्येक को भोजन तथा साथ में दो मिष्ठान का प्रसाद खिलाया जाता है । मानव सेवा के साथ योजना के कारण विज्ञापित कर रहे है । यह एक शुरुआत है । सम्प्रदाय में नवीन संकल्प होते रहेगे । संत-हरिभक्त देव का कार्य करते है । उसकी हमें खुशी है । इस कारण से विश्व के किसी भी हिस्सेमें हमारे बच्चे-बच्चियां जाये तो उन्हे भगवानका ज्ञान देना हमारा मूळ धर्म है । यह हमारे व्यक्तिगत एजेन्डा नही है । नाम हेतु कार्य नही करते है । दिवाल उपर, पंखा उपर, फ्रीज उपर जिसका नाम था । उसे मिटा दिया गया है । नाम किसी का नही रहता है । धर्मकुल वंदना महोत्सव में ३५० गाँवो घुमें तब जाकर एक घर में देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री जैसा कोई मनुष्य नही है । बड़े बापजी जिसे प्रमाण पत्र दिये हो इसके बाद भी फोटोन मिले तो हकीकत यह है कि ये नाम करने के लिए काम नही करते है । जो लोग फोटो और नाम के लिए मरते है ये लोग दुनिया छोड़कर जाय इतनी भी देर है । भगवान के सिवाय किसी का नाम नही रहता है । देव के लिए करिए आप दुनिया जीत जायेगे । नरनारायणदेव का पाटोत्सव अर्थात् देव का बर्थ-डे होता है । तो इस दिन देव को ''आँगन'' भी भेट देते हैं इतना कहकर सभीको आशीर्वाद प्रदान किये ।

श्री स्वामिनारायण म्युजियम

श्री स्वामिनारायण म्युजियम के द्वार से

पाटण के भक्त लोगो की मनोकामना पूरी हुई

श्री स्वामिनारायण भगवान जब दंढाव्य प्रदेश में विचरण कर रहे थे । तब पाटण में गये थे । तब श्रीजी महाराज भक्त श्री पुरुषोत्तमभाई के घर गये और पाटण के भक्तो की मनोकामना पूर्ण किये । यह पाटण का दरवाजा है । श्रीजी महाराज के समय के भक्तजनो की नाम सूची स.गु. श्री निष्कुलानंद स्वामीने भक्त चिंतामणी ग्रन्थ में उल्लेख किये है।

भक्त भावसार दयालजी, पुरुषोत्तम ने भक्ति रजी
कणबी भक्त छे इच्छो बेचर, भजे हरि छे पाटणे घेर ।

(यह दरवाजा हाल नं. ९ में देखने के लिये रखा गया है।)

– प्रफुल खरसाणी

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-मार्च-१८

रु. ११,०००/-	राजेशकुमार ललितभाई ठक्कर - वासणा
रु. १०,०००/-	मयूरी पंकजभाई - यु.एस.ए.
रु. ९,०००/-	अ.नि. प.भ. कोठारी नारणभाई अमरशीभाई कंडिया - लखतर (वर्तमान तेजशभाई कानजीभाई कंडिया - बोपल)
रु. ५,१००/-	क्षमाबेन (भालजा मंडल) प.पू.अ.सौ. गद्दीवालेश्री के खुशी हेतु - अहमदाबाद
रु. ५,०००/-	मीनाबेन के. जोशी - बोपल
रु. ५,०००/-	कृणालकुमार गीरीशभाई ठक्कर - अहमदाबाद
रु. ५,०००/-	विनुभाई आर. पटेल - अहमदाबा

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति का अभिषेक कराने वालों की नामावलि मार्च-१८

दि. १८-०३-२०१८	(प्रातः ७ बजे) जगदीशभाई कांतिलाल पटेल - गांधीनगर
	(१०-३० बजे) अ.नि.स.गु. ब्र. राजेश्वरानंदजी ह. एक हरिभक्त (सुरत) प्र. स.गु. जे.पी. स्वामी - कालुपुर स्वामिनारायण मंदिर
	(३-३० बजे) पटेल गोविंदभाई मणीभाई - नारणघाट - खांडवाला
दि. २९-०३-२०१८	श्री स्वामिनारायण मंदिर के पास वढवाण दरवाजा (बहनो रामपरा) ह. सांख्ययोगी गोपीबा तथा सांख्ययोगी ललिताबा

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. मोटा महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं ।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है ।

सत्संग बालवाटिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सत्संग का सिंचन

– शास्त्री हरिप्रियदासजी (गांधीनगर)

ईष्टदेव स्वामिनारायण भगवान गाँव गाँव में अनेक जीवो का कल्याण करने हेतु संतो के साथ स्वयं विचरण करते है तो कभी किसी के जीवन के कल्याण हेतु संतो को भेजते है। यह बात ध्रांगध्रा की है। ध्रांगध्रां में एक बड़े मठाधीश रहते थे। श्रीजीमहाराज संतो से कहते है, इस मठाधीश के मठ में ही एक दिन बिता कर आईए। इस मठाधीश के दिमाग में किसी कारण वश हठ हो गया है। कि ध्रांगध्रा में स्वामिनारायण नाम नही होना चाहिए। और स्वामिनारायण भगवान ने ही उसके मठ में जाने के लिए संतो को आज्ञा दिये है किसी ने सलाह दिया महाराज ! ऐसा न करे ? संतो का प्राण संकट में आ जायेगा। श्रीजी महाराज कहते है – कितने जीवो के सिर पर नरक चौरासी का खतरा है उसे दूर करने के लिए संतो को थोडा खतरा उठाना ही होगा । इस कारण से धबराना नही चाहिए।

महाराजने संतो को सलाह दिया कि सीधे स्वामिनारायण उच्चारण करके नहीं जाना है । अलग रुप से जाना है। तिलक बंद तथा माला छिपा देना तथा वहाँ पर भजन करना । इष्टदेव की आज्ञा को शिरोधार्य करके पाचस जैसे संत ध्रांगध्रा जाकर बडे मठाधीश के मढ में प्रवेश किये।

अन्दर प्रवेश करते ही पचास संतो ने जय बोला। अयोध्यानाथ की जय, सियार रामचन्द्र की जय... पवन सुत हनुमान की जय.... बोलिए सब सन्तन की जय...। मठाधीश खडे हो गये । ओ...हा....हा.... कोई भजन मंडली आयी है। आइए महात्माजी। कहाँ से आये है ? यात्रा करने निकले है, अयोध्या से आये है, द्वारिका की यात्रा पर है। मठाधीश खुश हो गये। हमारे यहां रात्री निवास करे। वो भी अयोध्या से है। सामहो गई थी तुरंत क्या हो ? खिचड़ी बना दिये कारण ''कृष्ण जैसा गाना नही, खिचडी जैसा खाना नही'' खिचडी जैसा कोई भोज्य पदार्थ नहीं । पचास संतो ने खीचडी खाई । मठाधीश पहचान नही पाये। खिचडी तो दूर, परेशान कर देते।

सभी संत भोजन करके बैठ गये। महाराजश्री की आज्ञानुसार शायं भजन प्रारम्भ किये । कुछ संत मीराबाई के भजन गाये। मीरा के प्रभु गिरधर नागर के गुण....., तो कुछ संत कबीर के भजन गाये । ''कहत कबीर सुनो भाई साधु, राम भजन विनु नही उद्धारा'' ''रामभज.... रामभजन प्राणी, एक दिन ये पींजरा टूट जायेगा।'' मठाधीश बोले वाह वाह मंडली बहुत अच्छी है यही रुकिए काफी दिन तक रुकिये आपकी थाकवट दूर हो जाय तब भी लौटते हुए यहाँ से ही जायियेगा।

महात्मा की मंडली बोली तीन दिन रहेगे । मठाधीशने शिष्यो को बुलाकर शिष्यो से कहे कल दाल-रोटी का अच्छा भंडारा होना चाहिए । भंडारा अच्छा होना चाहिए।

रात में सभी लोग दलान में सो गये। इसमें किसी संत को बगासा आया। संत और भक्त की प्रकृति होती है । बगासा आये, छींक आये, खाँशी आये तो तुरंत भगवान का नाम कंठ से निकलता है। रात्रि में शांति थी पचास संतो में से जिस संत को बगासा आया था वह तुरंत उच्च स्वर में बोले । महाराज..... स्वामिनारायण ...... स्वामिनारायण। इतने से सब कुछ काम बिगड़ गया । मठाधीश तत्काल जाग गये। स्वामिनारायण का नाम किसने लिया है ? स्वामिनारायण तो ऐसा है, वैसा है कुछ थोडे शब्दो बोले, खोजने के पश्चात कंठी दिखाई दे गयी। तुरंत बोले मेरी बंदूक लाओ। लाठी लाओ, सभी को

यहाँ से खदेड दूँ । सभी पचास संत बोले आप बंदूकवाले, लाटीलाये, या जो कुछ भी लाना हो लाये, हम लोग तीन दिन यहाँ रहेगे ही नही जायेगा । लगता था सभी संत हडताल पर आ गये हो । मठाधीशने भोजन नही प्रदान किया ।

ध्रांगध्रा के सेठ को सूचना प्राप्त हुई यहाँ पर पचास महात्मा भूखे बैठे है । ये अचछी बात नही है । उन्होंने वहाँ पर खिचडी भेजवा दी । संतोने भोग लगाया । तीसरे दिन स्वामिनारायण भगवान की जयघोष करते हुए बाहर चले गये । गाँ वके बाहर गोष्ठी किये । भक्त मुमुक्षु और लोग आये । और ध्रांगध्रा में सत्संग की स्थापना किये । जो वर्तमान समय में वट-वृक्ष के समान फल-फूल कर शोभा बढा रही है ।

मित्रो ! समझने वाली सुंदर बात है । अपने सुख हेतु, कल्याणहेतु अपने जीवन को खतरे में डालकर संतो ने सत्संग किया । इसी सत्संग परम्परा के हम सभ भक्त है । इसलिये नियम, निश्चय, पक्ष में दृढता रखकर शूरवीर बनकर, परम कृपालु स्वामिनारायण भगवान का भजन करना और करवाना चाहिए ।

●

परोपकार करने वाला पार उतरता है

- नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

मित्रो ! हमे पत्थर बनना है कि मनुष्य ? वैसे तो सभी की इच्छी मनुष्य बनने की होती है लेकिन मनुष्य बनने की योग्यता क्या है ? उसे समझना (करना) सभी टाल देते है । आज का प्रसंग मानवता जीवन में कितना उपयोगी है उसकी सही जानकारी देते है ।

एक राज्य में प्रतापी और पराक्रमी राजा शासन करते थे । ये राजा अपनी प्रजाका पुत्र समान ध्यान रखते थे । इस कारण से प्रजा राजा को अधिक प्यार करती थी । ऐसे दयालु प्रजाप्रेमी राजा को बिमारी हो गयी । राजवैद्य के प्रयास पश्चात भी बिमारी बढ़ती गई । राजा बेहोश हो गये । इस कारण से अढ़ोसी-पढ़ोसी राज्यो से वैद्य, हकीम आने लगे । सभीने अपने बुद्धि विवेक का प्रयोग किया लेकिन स्वास्थ्य में सुधार नही आया ।

जब वैद्य-हकीम से लाभ नही मिला तो जो कोई साधु-सन्यासी दिखाई दे उनको बुालकर दिखाये ताकि कोई चमत्कार हो सके । एक दिन एक सन्यासी प्रातः महाराज के दरबार में आये । उनके मुख मंडल पर विशेष चमक थी सभी ने मिलकर कहा राजा को ठीक करने का आप प्रयास करे । राजा के शरीर पर देखकर, थोडा ध्यान करके साधु महाराज उपाय बताने लगे कि उपाय अतिकष्टप्रद है लेकिन यह ठीक कर देगी । समीप में राजा के पुत्र एक साथ बोले कि कितनी भी कठिनाई हो, कितना भी दुढा हो हम यह उपाय करेगे । साधु कहने लगे । यहाँ से पाँच हजार माईल दूर तीन समुद्र जिस में बड़े मगरमच्छ, बड़ी-बड़ी मछलिया तथा पिषैले पानी से भरा है । इन तीन समुद्र को पार करने के पश्चात एक पर्वत पर राक्षस का महल है । उसका चौकीदार नरभक्षी है । इस राक्षस के बैठक कक्ष के जमीन के अन्दर (भूयरा) अति मजबूत तिजोरी के अन्दर कलश में अमृत जल से पूर्ण है । इसको लाकर यदि राजा के मुख पर छिडके तो राजा स्वस्थ हो जायेगे । इसके अलावा कोई दूसरा उपाय नही है ।

साधु महाराज की बात सुनकर बड़ा पुत्र, तुरंत तैयार हो गया । अमृतजल की खोज में आगे बढा । थोडी आगे चलने पर एक वन आया । रास्ते में एक वृद्ध महिला मिली । राजकुमार को देककर भूखी होने के कारण भोजन की माँग की लेकिन राजकुमार आगे बढ गये । जंगल पार करते जहां अन्त आया वही पर राजकुमार पत्थर बन गये । काफी दिन तक राजकुमार की प्रतिक्षा की गयी लेकिन वापस नही आये । तत्पश्चात दूसरे राजकुमरा तैयार हुए । इन्होने भी अपने अग्रज की तरह वृद्ध महिला की माँग की अवगणना कि उनकी भी स्थिति बड़े भाई जैसे ही हो गई ।

दोनो भाई काफी दिन हुए वापस नही आये ।

सबसे छोटे राजकुमार यात्रा के लिए तैयार हुए । सभी लोग समझाये आप मत जाइए लेकिन वो माने नही । उनके बदले में कोई जाये तब भी राजकुमार सहमत नही हुए । सभी लोगोने अति दुखी भाव से बिदाई दिये । छोटे राजकुमार भी उसी जंगल से जाने लगे, वृद्धाने पुनः उन से भी भोजन माँगा । वे यात्रा रोककर वृद्ध को भोजन दिये । नजदीक के जलाशय से जल लाकर दिये । इस सत्कार से वृद्धा खुश हो गयी । राजकुमार से आने का कारण ज्ञात की उसने एक टोपी भेट में दी और बोली कि इस टोपी के पहनने पर आप को कोई देख नही सकता है।

वहाँ से आगे चले वहाँ पर कुए में से किसी मनुष्य की आवाज आ रही थी थ कि बचाओ-बचाओ । पुनः यात्रा रोक कर कुए में गिरे आदमी को बाहर निकाले । कुआ में गिरा व्यक्ति जादूगर था । वह खुश होकर राजकुमार को एक लकडी दिया और बोला कि इस लकडी के स्पर्श से कितनी भी मजबूत वस्तु हो छेद हो जायेगा । जादूगर और वृद्धा के सदभावना से आगे चल रहे राजकुमार ने एक धायल घोडेको देखे । नजदीक जाकर देखे तो उसके शरीर पर चोट के निशान थे । राजकुमार धाव साफ करके पट्टी बाँधे और पानी पिलाये । घोडा स्वस्थ हो गया । वह भी राजकुमार से सूचना माँगी । वह घोडा देवत्व वाला था । वह राजकुमार को पीठ पर बैठाकर उडकर पल भर में तीनो समुदर् को पार करके पहाड की चोटी पर स्थित महल में आ गया । राजकुमार तुरंत टोपी पहन लिये । टोपी पहनने के कारण चौकीदार राजकुमार को देख नही सका । इस कारण से राजकुमार राक्षस के शयन कक्ष में भूयरे में पहुंच गये । वहाँ पर मजबूत तिजोरी थी । लेकिन जादूई छडी से राजकुमार ने उसमें छेद कर दिया । अमृत कलश लेकर राजकुमार तुरंत पावस आकर घोडे पर बैठ गये । तत्पश्चात जहाँपर उनके भाई पत्थर बने थे । वहाँ आकर अमृत जल छिडकते ही वे सभी जीवित हो गये । सभी लोग घोडे पर बैठकर राजमहल आ गये । पिताजी पास आकर उनके मुह पर अमृतजल का छिडकाव करते ही राजाजी उठ गये । छोटे राजकुमार को सभीने बधाई दिया । राजा खुश होकर राजकुमार को अपने राज्य की सम्पूर्ण जिम्मेदारी सौप दिये ।

मित्रो औ दो बड़े भाईयो ने दया, मानवता, परोपकार नही दिखाये तो पत्थर बन गये । छोटे भाईने पास मानवता थी । इस कारण से उसने वृद्धा, जादुगर घोडा को आवश्यक मदद दिये । वह कठिन कार्य सरलता से कर लिया । दया, मानवता और परोपकारी गुणो वाले व्यक्ति हमेशा सुखी रहते है । जिसके पास दूसरे की सहायता हेतु वृत्ति ही न हो उसे मनुष्य कैसे कह सकते है । ऐसे को पत्थर समान ही कहा जाता है । जो दुखी, जरुरत मंदो व्यक्तियों की सहायता न करें तो वह चलता-फिरता होने के बाद भी पत्थर जैसा ही है।

यदि हमे मनुष्य बनना है तो सेवा, परोपकार और सहायता के संस्कार विद्यार्थी जीवन से सिखना चाहिए । स्वामिनारायण भगवानने शिक्षापत्री में दया, सेवा, परोपकार जैसे सद्गुण जीवन में लाने के लिए आज्ञा दिये है । जिस में संस्कार और सद्गुण नहीवह मनुष्य ही नही है । परीक्षा समाप्त होने के बाद खाली समय में अच्छी पुस्तको को पढ़ना चाहिए । उसी प्रकार माता-पिता, बड़े, साधु पुरुष के मिलन से जब आप सहायक सिद्ध होगे तो समय के सदुपयोग के साथ मानवीय गुणो का विकास होता है । और जीवन में सुख और शांति का अनुभव सरलता से प्राप्त होती है।

श्री स्वामिनारायण मंदिर नारायणघाट - अहमदाबाद के नये महंत स्वामी स.गु. महंत शास्त्री स्वामी दिव्यप्रकाशदासजी गुरु अ.नि. स.गु. स्वामी देवप्रकाशदासजी की नियुक्ति की गयी है ।

श्री स्वामिनारायण मंदिर सिध्धपुर
संपर्क मोबाईल : ९७२६३४४७८३

भक्तिसुधा

"आँगन"

''आँगन'' अर्थात् अपने प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री का साकार हो रहे अलौकिक संकल्प।

आँगन का अर्थ आगे होता है। हर व्यक्ति के पास 'आँगन' हो ऐसा स्वप्न होता है। हमको सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण मिले तब से हम सभी सनाथ हो गये है। लेकिन दुनिया में ऐसे कई जीव है जिसे अपना कह सके ऐसा अपना आँगन नही मिल सका है। परंतु ऐसे अनाथ बच्चे-बच्चियो को घर का आंगन मिले इसी शुभ उद्देश्य से हमारे प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री की प्रेरणा संकल्प से कालुपुर मंदिर श्री नरनारायणदेव के परम सानिध्य में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से 'आँगन' का निर्माण साकार हो रहा है। श्री नरनारायणदेव के दर्शन मात्र से अपने जीवन के सभी इस लोक के कष्ट दूर हो जाते है। ऐसे महाप्रतापी भरतखंड के राजाश्री नरनारायणदेव का 'आँगन' इनके दुखी बच्चे-बच्चियों को प्राप्त होगा।

'आँगन' का संकल्प प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री के प.पू. लालजी महाराजश्री और पू. श्रीराजा के जन्म उत्सव पर अनाथ आश्रम के बच्चो से मिलने आये वहाँ अनाथ आश्रम में सभी बच्चो को मिठाइयाँ दे रहे थे तभी एक छोटा एक वर्ष का बच्चा उनकी साडी पकडकर छोड नही रहा था। काफी प्रयास करने पर साडी नही छोडा और वह रोता रहा। ऐसे हृदय विदारक दृश्य देखखर प.पू. गादीवालाश्री के आँखो में भी पानी आ गया। इस करुणा दृश्य को देखकर प.पू. गादीवालाश्री को 'आँगन' संकल्प का विचार आया।

इस घटना को आज भी याद करके प.पू. गादीवालाश्री बहनो को प्रेरणादेती है कि आप अपने बच्चो के जन्म दिन पर अन्य खर्च न करके अनाथ आश्रम में जाये तथा माता-पिता विहीन बच्चो को सुंदर भोजन करवाये। इस बात को अपना ध्येय बनाले कि एक अनाथ आश्रम बनाना है जिससे किसी बच्चे द्वारा पुनः मेरी साडी न पकडनी पडे। इस संकल्प को पू. महाराजश्रीने बढाया है।

थोड़े ही समय में हमारे श्री नरनारायणदेव की कृपा से 'आँगन' साकार हो रहा है। पू. महाराजश्री दूसरे किसी जगह पर भी 'आँगन' बना लेते। लेकिन श्री नरनारायणदेव का आंगन किसे मिले! इसलिए हमारे श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर के पीछले भाग धनासुथार की पोल में प.पू. महाराजश्री इसके लिए मकान लेकर विशाल जमीन सम्पादित किए है उसी में 'आँगन' की इमारत बन रही है। जिससे भविष्य में सुरक्षा के साथ बालको का प्रेमपूर्वक पालन होगा तथा उनका भविष्य सुन्दर होगा।

ऐसे समाज उपयोगी कार्य में कई हरिभक्त भाईयो-बहनो ने अधिक साथ सहयोग दिया। और भविष्य में भी देते रहेंगे। लेकिन ऐसे 'आँगन'के लिए दान की आवश्यकता नहीं है। जब आवश्यकता होगी आवश्यकतानुसार सामान लाना होगा। तब आप सभी को सूचित करेंगे। 'आँगन' तैयार होने में थोडा समय लगेगा। इसके बाद उसमें सेवा के बारे में सत्संगी बहनो को बताया जायेगा। जिसे विशेष ध्यान दे।

•

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
(एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली) "मनुष्य जितना "सरल" होता है। वैसे ऐश्वर्य प्राप्त करता है।"

(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

अर्थात् जो ज्ञानी व्यक्ति है, महानपुरुष हो, उसके शुभ व्यवहार 'सरल' होते ही है। जब कि अज्ञनी को शुभ व्यवहार करना पडता है। जो महान पुरुष होते है उनके

जीवन को देखते-देखते उनके सद्‌गुणो का अनुकरण करते करते सामान्य मनुष्य भी ''सरलता'' प्रयत्न से प्राप्त कर सकता है। 'सरलता' अर्थात् स्वयं के ''मन'' बचन 'शरीर' ये गतिशील रहे इसको साक्षी भाव से निरीक्षण करते रहना है। कैसे ? उदाहरण स्वरुप एक राजा ने अपने राज्य में विज्ञापन किया 'आज सभी का भोजन यहाँ पर है। राजा के राज्य में एक सन्यासी रहते थे उन्हो खाने से मनाकर दिया। राजा के आदमी सन्यासी के पास आये तो भी सन्यासी बोले मुझे नही आना है। आने के लिए प्रलोभन दिया गया कि आप को भेट दी जायेगी। आप को सम्मान दिया जायेगा। तो भी संन्यासी न बोले कि मैं ऐसे प्रलोभन से आकर्षित नही होने वाला हूँ। अंत में बोला गया आप को सजा दी जायेगी क्योकि राजा की बात आप नही मान रहे है। तो उन्होने कहा आप का गला काट दिया जायेगा। तब संन्यासी ने उत्तर दिया कि मुझे कोई प्रभाव नही पडेगा। आप भी देखना और हम भी देखेंगे कि मेरा गला काटकर जमीन पर पड़ा रहेगा।

कितनी अधिक सरलता !

तो यहाँ प्रश्न ये होता है कि सामान्य व्यक्ति कठोर क्यो जाता है ? हम कितने बार देखते है कि किसी को क्रोधआ जाता है। मार पीट हो जाती है। तो भी उस व्यक्ति को जानकारी नहीं होती है कि वह स्वयं क्या कर रहा है ? यदि उसी समय अंदर की चेतना अर्थात् साक्षीभाव जागृत हो जाये तो ये कार्य नही करेगा क्यो कि ? क्योकि ज्ञान हो जाता है वह क्या कर रहा है। लेकिन सामान्य मनुष्य को ऐसा ज्ञान नही हो पाता है। इसलिए अज्ञानरुपि आवरणो और अहंकार के कारण सामान्य मनुष्य 'कठोर' हो जाता है। क्योंकि ? मनुष्य जैसा है वह अपने उपर संतुष्ट नही होता है कि जीव को जो शांति चाहिए वह प्राप्त नही होती है। मनुष्य के चित्त का स्वभाव है कि सर्वदा सुख की खोज में रहता है। इस लिए मनुष्य दूसरे की नकल करता है। लेकिन मानव की अनुकरण का तरीका विपरीत है। क्यों कि ? बाहर की वस्तु का अनुकरण करता है। चलने, पहनने, बैठने का अनुकरण करना ही हो तो सद्‌गुणो का अनुकरण करना चाहिए। साक्षी भाव से देखे आप क्या कर रहे है ? हमारे अंदर की जो चेतना है वह २४ घंटे हमको बोधकराती है। नीदं में भी उदाहरण रुप मैं यदि हम दीर्ध निद्रा में हो यदि कोई आदमी आप का नाम २-३ बार पुकारे तो आप उठ जाते है ? तो यह आप को बोधहोता है कि आप को बुलाया जा रहा है। यह कौन कराता है ? यह अपने अन्दरकी चेतना है जो बोध कराती है। हमारी ये चेतना, जगमगाता प्रकाश है। इसलिए परमात्मा को पाने के लिए हमेशा जागती है तो हम जागते है। परमात्मा के लिए हम दौडते है ऐसा लगता है। संसार की वस्तु प्रारब्धमें होगी तो मिलती है। इस संसार की कोई वस्तु प्राप्त करना हो तो चलकर वहाँ तक जाना पडता है। कभी दौड भी लगानी पडती है। कभी ऐसा भी होता है आधा जाने के बाद मालुम पडता है कि यह दिशा खराब है और वहाँ से पुनः दिशा बदलना पडता है। इस तरह कई प्रयत्न करने पर यदि प्रारब्धमें है तो वस्तु प्राप्त होती है। लेकिन प्रयास तो करना ही पड़ता है। सभी अच्छा है, इसमें कुछ खराब नहीं है। लेकिन हम परमात्मा को प्राप्त करने के लिए इसी विधिका प्रयोग करते है। जैसे संसार की वस्तु प्राप्त करने के लिए दौडते है। इस कारण हम ईश्वर से दूर होते जाते है। क्यों कि ईस्वर प्राप्ति के लिए अन्दर से दौडना होता है। जितना अन्दर जायेगे। उतना ईश्वर के पास जायेगे। अभी तक जो हो गया हो गया अब पीछे दौडना नही है। जो पानी बह गया वह वापस नही आता है। नया सर्जन करना है। तो नई वस्तु के सर्जन हेतु क्या करना पडेगा ? पुरने को नष्ट करना पडेगा उसके लिए अन्तदृष्टि से देखना पडेगा। यह शरीर क्षणभंगूर है। इस शरीर का एक पल में क्या होगा किसी को ज्ञात नही है। यदि हम प्रयास करे तो आत्मनिष्ठ होकर २४ घंटे स्वयं को साक्षी भाव से देख सकते है। सरल रुप से अन्तदृष्टि होगी तो साक्षी भाव पैदा होगा। जो स्थायी जागृत रहेगा। लेकिन मनुष्य की कमजोरी क्या है ? वह मैं और मेरा दो को केन्द्रबिन्दु मे रखकर मनुष्य जीता है। २४ घंटे में २४ सेकन्ड भी मनुष्य स्वयं के १००% एकाकी भाव में रखे तो भी अचछा है। अकेले होकर अपने को देखे तो उसे ज्ञान होगा की वह स्वयं क्या कर रहा है ? हमे कुछ होता है तो कहते है कि ध्यान से

चलिएया इन्हे खराब लग गया। ध्यान में रहकर बोले तो हमें ऐसा लगता है कि काम भी करना और ध्यान में भी रहना। दो काम कैसे होगा ? इसकी जगह पर कोई बोले दौडिये और भोजन करिए तो यह असम्भव है। दो मे से एक ही होगा। पूजा करिये सो जाइए यह भी नही हो सकता है। लेकिन ध्यान में रहकर जो कार्य करने को कहा जाता है। अर्थात् कार्य आपकर रहे है तो आप का मन उसमें होता ही है। इसके बाद भी मन लगाकर कार्य करना। आप के चित्त की उपस्थिति वहाँ होनी चाहिए। यदि आप भोजन कर रहे मन दूसरी जगह पर है तो दोनो क्रिया अपूर्ण है। क्योकि भोजन करने के लिए खा लिए। आप क्या खाये वह भी ठीक से ज्ञान नही हो पाता है। जहाँ आप का मन है वहाँ पर आप की शरीर नही है। भोजन की थाली है वहाँ आप की शरीर है। वहाँ आप का मन नही है। जहाँ मन है वहाँ शरीर नही है। तो दोनो अधुरे है। जहाँ मन है वहाँ पर नही गया खाये उसमें मन नही था। इसलिए जो कार्य करिए पूरा मन लगाकर करिए तो कार्य पूर्ण सफल होगा। और थकावट भी नही लगेगी। मन विना कार्य करने से सिरदर्द होने लगता है। काम करने का आनन्द भी नही आता है। अपना मन दूसरी जगह है तो मन जहाँ है वहाँ पर हमें स्थिरता है। खीच तान में कारण थकावट लगती है। हम ऐसा करते है कि ध्यान से करना। तो उसे भी हम काम समझ लेते हैं। इस पर दबाव देगे तो भी थकान लगती है, तो सरलता से उसे करना मन से करेगे तो सरता से हो जायेगा। कईबार कोई भी कार्य हम मन एकाग्र करके करते है तो भी नही होता है। अपना कार्य अपने से नही हो रहा है ऐसा कहकर थक जाते है। तो दीन-हीन होकर बैठना नही चाहिए। लक्ष्य तक पहुंचने का प्रयास करना चाहिए। धैर्य रखना पड़ता है। बच्चा चलना सिखता है तो उससे पूर्व बकैया चलता है। इसके बाद खडा होता है पुनः गिर जाता है। फिर बकैया चलता है फिर दिमाग में सोचता है कि अभी तो चल रहा था। फिर खडा होता है ऐसे करते करते सीख जाता है। तो हमे अपने परमात्मा की प्राप्ति हेतु प्रयत्न करना चाहिए।

श्री स्वामिनारायण पत्रिका प्रकाशन की मालिकी के सन्दर्भ में।

From-IV (see Rule : 8)

१.	प्रकाशक	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१
२.	प्रकाशन समय	:	प्रति मास
३.	मुद्रक का नाम	:	महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१
४.	संपादक का नाम	:	महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१
५.	मालिक	:	श्री नरनारायणदेव गादी के अधिपति प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
	राष्ट्रियता	:	हिन्दी
	पता	:	श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद-१

मैं शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी यह स्पष्ट कर रहा हूं कि ऊपर दी गई बातें मेरी जानकारी और समझ के अनुसार सत्य है।

हस्ताक्षर : शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी, महंत स्वामी
श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर,
अहमदाबाद-१ (प्रकाशक की साईन)

सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर श्रीहरि प्रागटोत्सव - रामनवमी पर्व

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा पू. महंत स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा एवम् मार्गदर्शन से श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर परमकृपालु श्री नरनारायणदेव के परम दिव्य सानिध्य में चैत्र सुद-७ ता. २५-३-१८ रविवार के दिन सर्वोपरि ईष्टदेव श्री स्वामिनारायण भगवान का प्रागट्योत्सव अधिक धाम-धूम से मनाया गया।

प्रात: ७ बजे अक्षरभुवन में विराजमान सर्वोपरि श्री बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज के पाटोत्सव अवसर पर प.पू. लालजी महाराज के करकमलो द्वारा षोडशोपचार महाभिषेक वेद विधिसे पूर्ण किया गया। तत्पश्चात अन्नकूट आरती भी प.पू. लालजी महाराजश्री के शुभ हाथो से हुई। श्री नरनारायणदेव की ऋंगार आरती प.पू. बड़े महाराजश्री के शुभ हाथो द्वारा हुई। पाटोत्सव के यजमान प.भ. भद्राबेन दिलीपकुमार वकील (शाह) पूरे परिवार के साथ अहमदाबाद में रहे थे।

इस अवसर पर शहर और गाँव-गाँव से आये कई हरिभक्त दर्शन हेतु आये थे। श्री स्वामिनारायण मंदिर श्री नरनारायणदेव युवक मंडल और हरिभक्तो द्वारा प्रत्येक भक्तो को नीबू का सुंदर रस पिलाया गया था। दोपहर १२ बजे मर्यादा पुरुषोत्तम श्री रामचन्द्र भगवान के प्रगटोत्सव की आरती धाम-धूम के साथ की गयी।

रात में ८ से १० कालुपुर मंदिर के प्रसादी के विशाल भाग में सुंदर शोभायमान श्रृंगार युक्त मंडप में संत-हरिभक्त और गायक वृंद द्वारा कीर्तन भक्ति रस-गरबा धूम-धाम से मनाया गया था। वातावरण अलौकिक और दिव्य हो गया था। रात्रि में १० बजकर १० मिनिट पर सर्वोपरी बाल घनश्याम प्रभु की प्रगटोत्सव की आरती जन्मोत्सव अधिक भव्य रुप से सम्पन्न हुआ। हजारो हरिभक्तोने जन्मोत्सव आरती का दर्शन करके पंजीरी का प्रसाद लेकर धन्य हुए.

सम्पूर्ण अवसर में पू. महंत स्वामी के मार्गदर्शन के प्रमाणसे जे.पी. स्वामी (भंडारी), जे.के. स्वामी (कमेटी सदस्यश्री), पू. हरिचरण स्वामी (कलोल), कोठारी शा. नाराणमुनि स्वामी, भक्ति स्वामी आदि संत मंडलने अत्यधिक प्रेरणाप्रद सेवा दिये। (शा. स्वामी नारायणमुनिदासजी)

श्री नरनारायणदेव बाल सत्संग मंडल द्वारा टोरडाधाम यात्रा

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे तथा प.पू. लालजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से अपने श्री नरनारायणदेव बाल सत्संग मंडल का बच्चो ने ता. ११-३-१८ रविवार को टोरडाधाम दर्शन के लिए प्रवास का सुंदर आयोजन किये थे। कालुपुर मंदिर से अपने पू. महंत स्वामी, भंडारी स्वामी जे.पी. स्वामी, कोठारी जे.के. स्वामी और कोठारी शा. मुनि स्वामीने बच्चो के लिए अल्पाहार प्रसाद की व्यवस्था किये थे।

सर्वप्रथम शामलाजी में शामलाजी भगवान का दर्शन करके टोरडा मंदिर गये थे। जहाँ पर श्री गोपाललालजी श्रीहरिकृष्ण महाराज का दर्शन किए। यहाँ के महंत स्वामी कृष्णप्रसाददासजीने स.गु. गोपालानंद स्वामी के साथ शामलाजी से शामलाजी भगवान टोरडा खेलने आते थे, बाल लीला की सुंदर बात बताये। सभी बच्चो को सुंदर भोजन कराया गया। बच्चे बस में अहमदाबाद आते समय नंद संतो के कीर्तन आदि को गाकर अधिक आनन्दित हुए। (गोपालदास मोदी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षद कोलोनी (बापुनगर) मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

श्रीहरि की असीम कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा और धर्मकुल के आशीर्वाद से मंदिर के ट्रस्टीयों और श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के साथ सत्संग समाज का आयोजन से, भूमिदान के मुख्य यजमान अ.नि. रणियातबा तथा मोहनबापा ठुम्मर, प.भ.श्री नरसिंहभाई नारणभाई भंडेरी, पारायण के मुख्य यजमान प.भ. अरविंदभाई रवजीभाई दोंगा परिवार उसी प्रकार निर्माण कार्य, मूर्ति, सिंहासन, शिखर, कलश इत्यादि की कई सेवा यशस्वी यजमानो और सेवाभावी हरिभक्तो ने तन,

मन, धन से सेवा दिये जिस में मुख्य तथा जमीन सम्पादन से शुरु करके महोत्सव के अंततक प.भ. परसोत्तमभाई (दासभाई) के मार्गदर्शन के साथ अथक सेवा दिये । ता. २६-२-१८ से ४-३-१८ के बीच मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव अत्यधिक हर्षोल्लास तथा धामधूम से पूर्ण हुई ।

सर्व प्रथम इ.स. १९८६ में हर्षद कोलोनी के इस मंदिर में प.पू. बड़े महाराजश्रीने स्वयं के कर कमलो से मूर्ति प्रतिष्ठा किये थे । इस मंदिर की यह विशेषता है कि उस सम यमें क्षेत्र में सत्संग करने वाले अ.मू.स.गु. गोपालानंद स्वामी के शिष्य परम्परा के अहमदाबाद मंदिर के पू. नारायणदास स्वामी द्वारा उनके कृपा पात्र भक्तजन पूजारीश्री मोहनबाबा और उसके बाद दासबाई से प्राप्त श्रीहरि की प्रसादीवाली मूर्तियाँ चरणारविंद और अनेक वस्तुओ प.पू. बड़े महाराजश्री की आज्ञा से इस मंदिर में विराजित किया गया है । जो आज नये मंदिर मे भी दर्शन मिलता है । सत्संग का प्रभाव बढने के कारण अहमदाबाद के पूर्व भाग में क्रमश चार मंदिरो का निर्माण हुआ है । हर्षद सोसायटी के इस पुराने मंदिर में आवश्यकता होने के कारण क्रमशः प्रथम बहनो का नया मंदिर तथा कुछ वर्षो के बाद भाइयो के कारण क्रमशः प्रथम बहनो का नया मंदिर तथा कुछ वर्षो के बाद भाइयो के लिए अधिक सुंदर और भव्य मंदिर निर्मित हुआ । जिसके प्रांगणमें प.पू. महाराजश्री की रुचि अनुसार चारो तरफ पक्की बैठक के साधपानी का फुहारा भी बनाया गया है ।

महोत्सव के अन्तर्गत सम्प्रदाय के सुप्रसिद्ध विद्वान सत्य, निडर, वक्ता स.गु. शा. स्वामी निर्गुणदासजी (वेदांताचार्य) के वक्तापद पर श्रीमद् सत्संगीजीवन सप्ताह पारायण का आयोजन हुआ था । कथा के साथ पोथीवाला श्री घनश्याम जन्मोत्सव, श्रीहरि के गद्दी का अभिषेक, श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा अभिषेक उसी प्रकार महोत्सव के उपलक्ष में श्री नरनारायणदेव के पूजारी ब्र. स्वामी मुकुन्दानंदजी और बाल कलाकार ॐ सोनी द्वारा सत्संग डायरा, युवाओ द्वारा संस्कार प्रेरक नाटक, समूह महापूजा यज्ञ, रासोत्सव के साथ श्री ठाकुरजी की नगरयात्रा, अन्नकूट और धामो धाम से आये विद्वान ब्रह्मनिष्ठ संत महंतो के मुख से व्याख्यान का सुंदर प्रबन्धहुआ था । प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री तेमज प.पू. बड़े गादिवाले आकर कथा का श्रवण किये बहनो को दर्शन-पूजन का दिव्य सुख प्रदान किये थे ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने अपने हाथो से वेदोक्त विधिसे श्री घनश्याम महाराज, श्री नरनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव तथा पंचदेवो के साथ हनुमानजी की प्रतिष्ठा की गयी । यज्ञ और कथा की पूर्णाहुति करके सभा में आये मुख्य यजमानो का सन्मान करके सभी को शुभाशीर्वाद देकर ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारी गयी थी । इस अवसर पर १०,००० जितने भक्तो ने भोजन प्रसाद ग्रहण किये ।(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापुनगर) का १३ वाँ और महिला मंदिर का प्रथण वार्षिक पाटोत्सव मनाया

ईष्टदेव भगवान श्री स्वामिनारायण की कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा के साथे धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा स.गु. स्वामी लक्ष्मणजीवनदासजी के मार्गदर्शन से प.भ. घनजीभाई शंभुभाई डोबरिया तथा महिला मंडल (एप्रोच) के मुख्य यजमान के पद पर तथा छोटे बड़े यजमान हरिभक्त और श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की तन, मन, धन की सेवा से ता. २३-२-१८ के दिन एप्रोच मंदिर के वार्षिक पाटोत्सव धाम-धूमसे मनाया गया ।

पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. १६ से २३ तक एप्रोच मंदिर के साधु पू. हरिकृष्णदासजी ने वक्ता पद से श्रीमद् भागवत ग्रन्थ की रात्रि पारायण का आयोजन किया गया । छपैयाधाम कथा मंडप में कथा के अन्तर्गत पोथीयात्रा, श्री कृष्णजन्मोत्सव और रुक्मणीविवाह रासोत्सव के साथ अधिक उल्लास के साथ मनाया गया । सम्पूर्ण अवसर पर तीर्थस्थानो से आये विद्वान ब्रह्मनिष्ठ संतोने अपने दिवय् वाणी का लाभ दिये । प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुप गादीवालाश्री आकर बहनो को विशेष अलौकिक लाभ दी ।

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री स्वयं के कर कमलो द्वारा श्री घनश्याम महाराज को षोडशोपचार अभिषेक करके सभा में आशीर्वाद दिये तथा अन्नकूट की आरती उतारे थे । पाटोत्सव में हजारो हरिभक्तोने शाकोत्सव का भोजन प्रसाद के रुप में ग्रहण किये । समाज सेवा के रुप में ३५ रक्तदाताओने रेडक्रास के माध्यम से सिविल अस्पताल के थेलेसमिया के रोगियो के लाभ हेतु रक्तदान किये । (गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर सुघड (जि. गाँधीनगर) चौथा पाटोत्सव

परमकृपालु ईष्टदेव सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा-आशीर्वाद से तथा पू. स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकेशवदासजी (गाँधीनगर

से-२३) की प्रेरणा एवम् मार्गदर्शन से सुघड मंदिर के चौथे पाटोत्सव प.भ. गोविंदभाई विठ्ठलभाई पटेल परिवार के यजमान पद से ता. २३-२-१८ को शुक्रवार के दिन धामधूम से मनाया गया । ठाकुरजी की अन्नकूट आरती प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री प्रेरणादायक आशीर्वाद भेजे थे । गाँव तथा अगल-बगल के गाँव के हरिभक्तोने दर्शन का लाभ लिया ।(कोठारी मफतभाई आई. पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर फूलोत्सव मनाया

परमकृपालु ईष्टदेव सर्वोपरी श्री स्वामिनारायण भगवान की कृपासे तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से उसी प्रकार स.गु. महंत शा. स्वामी विश्वप्रकाशदासजी और कोठारी स.गु. शा. स्वा. विश्वप्रकादासजी के सुंदर प्रेरणादायक मार्गदर्शन से ऐतिहासिक नगरी वडनगर श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणदेव जयंती-फूलोत्सव के शुभ दिन बाल स्वरुप श्री घनश्याम महाराज के पूजारी शा. स्वा. धर्मविहारीदासजीने सुंदर भव्य फूलो (प्राकृतिक पुष्प) से श्रृंगार करके दर्शन कराये । वडनगर के हरिभक्त फुलोत्सव का दर्शन करके धन्य हुए । संतो द्वारा रंग-बिरंगी गुलाल से रंग उडाया तथा भव्य उत्सव किये । तत्पश्चात सबको प्रसाद बितरित किया गया ।(नवीनभाई मोदी - ट्रस्टीश्री)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनोका) रामपरा मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

मूली निवासी परमकृपालु श्री राधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज की कृपा से तथा प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा सुरेन्द्रनगर मंदिर के स.गु. महंत स्वामी प्रेमजीवनदासजी तथा सांख्ययोगी कमलाबा की प्रेरणा से रामपरा गाँव में बहनो ने भव्य श्री स्वामिनारायण मंदिर पूर्ण होते ही ता. ७-३-१८ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की करकमलो द्वार मूर्ति प्रतिष्ठा उत्साहपूर्वक पूर्ण हुई ।

मूर्ति प्रतिष्ठा के उपलक्ष् यमें ता. १-३-१८ से ७-३-१८ तक श्रीमद् सत्संगिजीवन सप्ताह पारायण स.गु. शा. स्वा. श्रीजीप्रकाशदासजी (हाथीजण) के वक्तापद एवं सगीत के साथ सम्पन्न हुई । साथ ही सथ तीन दिन तक श्रीहरि यज्ञ रात्रि कालीन सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा शोभायात्रा जैसे अनेक कार्यक्रम हुए । बहनो को दर्शन-आशीर्वाद देने के लिए प.पू.अ.सौ. गादीवालाश्री आये थे ।

प्रतिदिन शायं ४ से ४-३० तक व्याख्यान माला का आयोजन किया गया था । जिस के वक्ता पदी पूजारी स्वामी त्यागवल्लभदासजी थे । सात दिन तक सभा का संचालन महंत शा. स्वामी भक्तिनंदनदाजी (मोरबी) ने सुंदर रुप से बढाया था ।

पूरे आयोजन के मार्गदर्शक और प्रेरक स.गु. कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी थे ता. ७-३-१८ के दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के करकमलो द्वारा नये मंदिर में ठाकुरजी की प्राण-प्रतिष्ठा वेदोक्त विधिसे उत्हापूर्वक पूर्ण हुई । तत्पश्चात सभा में आकर लोगो को आशीर्वाद दिये । इस अवसर पर अहमदाबाद, मूली, वडताल, गढपुर आदि धामो से संत एवम् सांख्ययोगी बहने आयी थी ।

प्रसंग के सुंदर सेवा में पूजारी स्वामी विश्वस्वरुपदासजी और घनश्याम स्वामी आदि संत मंडल उपस्थित थे ।(शैलेन्द्रसिंह झाला)

विदेश सत्संग समाचार

न्यूजर्सी पारसीप की छपैयाधाम

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधीश्वर प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से श्री स्वामिनारायण मंदिर न्यूजर्सी पारसीप (छपैयाधाम) में बिराजमान बालस्वरुप श्री घनश्याम महाराज, श्री नरनारायणदेव, श्री लक्ष्मीनारायणदेव तथा श्री राधाकृष्णदेव आदि देवो को शा. स्वा. अभिषेकप्रसाददासजी तथा प्रेसि. पंकजभाई पटेल तथा सभी नवयुवक हरिभक्तोने श्री नरनारायणदेव जयंती फुलोत्सव के अवसर पर रंगबिरंगी अनेक प्रकार के नवीन पुष्प के द्वारा सजाकर हरिभक्तो को दर्शन कराया गया । इन पुष्पो की सजावट में स्वामीजीने लगातार १२ घंटे सेवा दिये थे । सारे पुष्प प्राकृतिक होने के कारण श्रीहरि की मूर्ति अलौकिक शोभायमान हुई थी । सभी हरिभक्तो ने देव, आचार्य महाराजश्री और सत्संग के प्रति दृढ निष्ठा व्यक्त किये । तथा दर्शन करके धन्यता का अनुभव किये । (प्रेसी. श्री पंकज पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर शिकागो

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधीश्वर प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से शिकागो श्री स्वामिनारायण मंदिर

में सत्संग की प्रवृत्ति अधिक सुंदर रुप से होती है।

बीते महीने में शिवरात्री, समूह महापूजा, शाकोत्सव श्री नरनारायणदेव जयंती, फूलोत्सव आदि उत्सवो का आयोजन स.गु. स्वा. भक्तिनंदनदासजी (अंजली मंदिर - अहमदाबाद) और पूजारी स्वा. शांतिप्रकाशदासजी की प्रेरणा एवम् मार्गदर्शन से उत्साह पूर्वक पूर्ण हुआ। भक्तिनंदन स्वामीने श्री नरनारायणदेव जयंती का विस्तृत महात्म कहे थे ।''श्रीहरि स्मृति'' कथा तथा उनके वक्तापद पर पूर्ण हुई। कई हरिभक्त यजमान बन कर अलौकिक लाभ प्राप्त किये । (वसंत त्रिवेदी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन फुलोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधीश्वर प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से तथा महंत स्वामी नीलकंठचरणदासजी की प्रेरणा से अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन टेक्सास में शनिवार सप्ताहन्त सायं ५ से ८ बजे होलिका दहन-पूजन करके धानी-चना खजूर का प्रसाद वितरित किया गया। ७०० जितने हरिभक्तोने भजन-कीर्तन गाये। संतोने उत्सव की परम्परा और महत्व को समझाया। ठाकुरजी का अभिषेक वेद विधी से पूर्ण हुआ। यजमानो का सन्मान किया गया।

सायं की आरती करके श्री हनुमान चालीसा का पाठ किया गया।(प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया फूलोत्सव

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधीश्वर प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा से एवम् समस्त धर्मकुल के आशीर्वाद से अपने कोलोनीया श्री स्वामिनारायण मंदिर में फूलोत्सव श्री नरनारायणदेव जयंती के पर्व पर ठाकुरजी को फूलो (प्राकृतिक) से दिव्य सजाया गया था। नंद संतो द्वारा रचित होली के पद और महामंत्र की धुन के पश्चात भगतजीने उत्सव के महत्व को बताया । यजमानो की सेवा का आदर करते हुए सम्मान किये तथा आगमी उत्सवो की जानकारी दिये। अंत में जनमंगल पाठ, थाल, संध्या शयन आरती के पश्चात सामुहिक प्रसाद का प्रबन्धकिया गया था।(शाह प्रविणभाई)

श्री स्वामिनारायण मंदिर (आई.एस.एस.ओ.) टोरेन्टो केनेडा में बाल सत्संग कैम्प

परमकृपालु श्री नरनारायणदेव की कृपासे तथा श्री नरनारायणदेव पीठाधीश्वर प.पू.ध.धु. आचार्य १००८ श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री की आज्ञा तथा परम पूज्य लालजी महाराजश्री की प्रेरणा मार्गदर्शन से टोरेन्टो-केनेडा में अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर में मार्च महीने के शनिवार - रविवार को रेसीडेन्ट कैम्प में बच्चो के लिए बाल सत्संग कैम्प भव्यता से पूर्ण हुआ। जिस में कई बच्चे उत्साह पूर्वक भाग लिए । इस वर्ष कैम्प की थीम 'अपने घनश्याम महाराज'' जी थे । बाल घनश्याम महाराज को केन्द्र में रखकर पूरे गति विधि(क्रिया-कलाप) किये गये थे।

शनिवार को प्रातः श्री स्वामिनारायण महामंत्र धुन से कैम्प प्रारम्भ किया गया । मनोरंजक ढोल, ज्ञान युक्त प्रतिस्पर्धा और प्रिय व्याखानश्रृंखला कैम्प के मुख्य आकर्षक बिन्दु थे।

पोपसिकल स्टीक्स मे से केरा पोल्ट अर्थात् गोफर्ण बनाने की प्रतिस्पर्धा में बच्चो की स्वयं सर्जनात्मक शक्ति के साथ कोल्डड्रिंक स्ट्रो में से मजूबत टाक बनाकर अभियंत्रण क्षेत्र का कौशल दिखाये।

किन्ही दो बच्चो की रचना एक समान नही थी। रात्रि में कीर्तन भक्ति और रास गरबा बच्चो द्वारा प्रस्तुत किया गया था।

रविवार को प्रातः पूजा, शिक्षापत्री, पाठन, आरती, धुन के बाद बच्चो ने हल्के व्यायाम के साथ योग भी किये। दोपहर के सत्र में जुनियर मिडिल वर्ग के बालको द्वारा हिन्दु संस्कृति और व्यक्तित्व विकास के बारे में सुंदर पावर प्रजेनटेशन प्रस्तुत किया गया था। कैम्प में सहभागी बच्चो के संरक्षक द्वारा इसो टोरन्टो मैनेजमेन्ट कमेटी तथा अपने मंदिर द्वारा संचालित बाल सभा की संचालिका बहनो के ऐसे कार्य की प्रशंसा की गयी। अपने प.पू. लालजी महाराजश्री और पू. राजाश्रीने ऐसे सुंदर बच्चो का आदर किये तथा उत्तरोत्तर प्रगति करे इस लिये आशीर्वाद प्रदान किये । (आई.एस.एस.ओ. टोरन्टो केनाडा)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

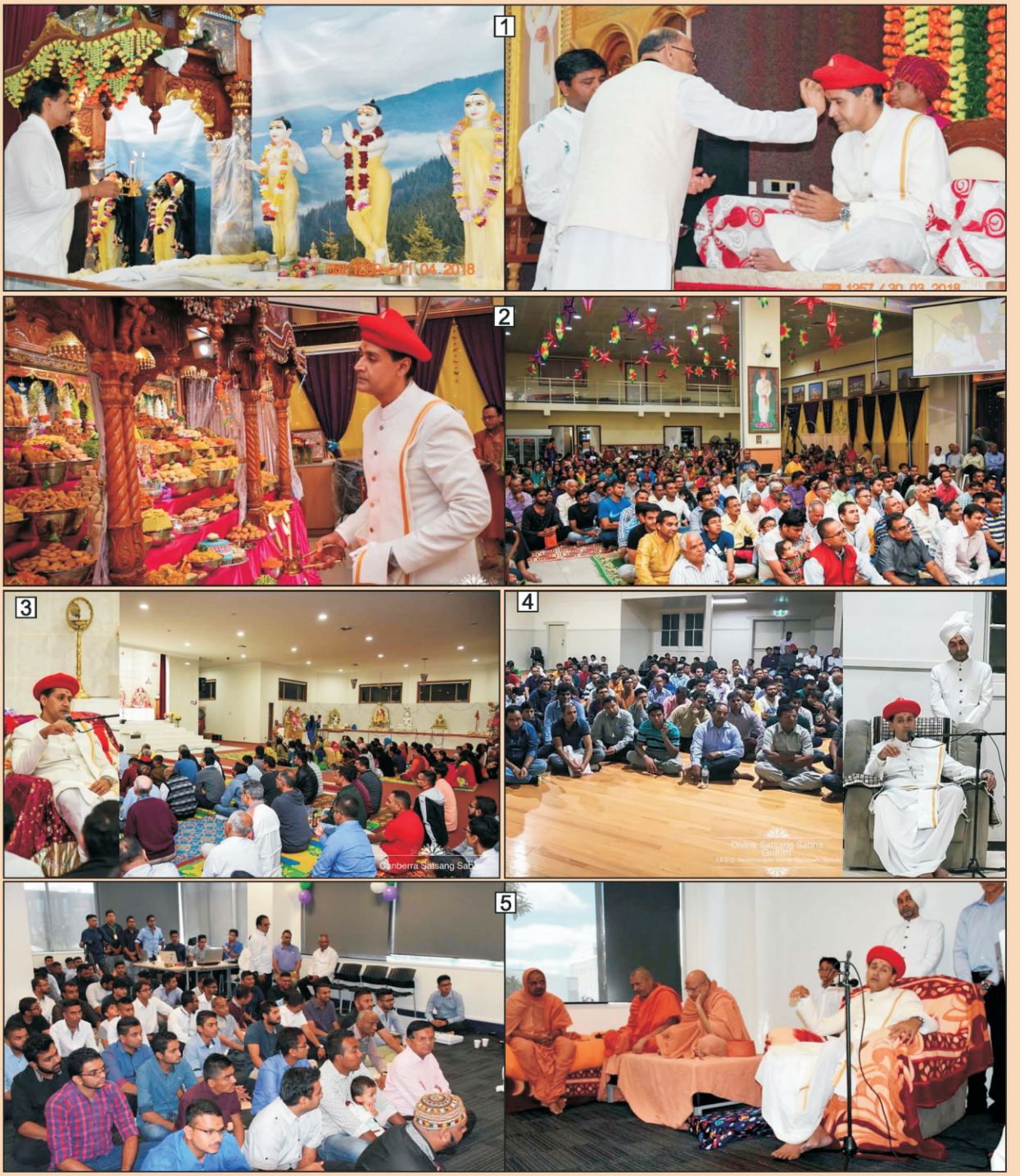

(१) आकलेण्ड न्युजीलेन्ड मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा पू. महाराजश्री का पूजन करते हुए डॉ. कांतिभाई पटेल ।(२) सिडनी मंदिर के पाटोत्सव अवसर पर ठाकुरजी की आरती उतारते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(३) ग्रीफीथ - आस्ट्रेलिया के सत्संग सभा में आशीर्वाद देते हुए पू. महाराजश्री ।(४) कैनबेरा - ओस्ट्रेलीया में सत्संग सभा में आशीर्वाद देते हुे पू. महाराजश्री ।(५) हेमील्टन -न्यूजीलैण्ड में सत्संग सभा को आशीर्वाद देते हुए पू. महाराजश्री ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/2018-2020 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2020

1

2

(१) रामनवमी - श्रीहरि जयंती का उत्सव श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर में धूम-धाम से मनाया गया ।

(२) न्यूयार्क में नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर का भूमिपूजन करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

(३) अमेरिका के बोर्लिंगग्रीन, कंटकी में नूतन श्री स्वामिनारायण मंदिर का भूमि पूजन करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।

3

shree swaminarayan temple
kalupur, ahmedabad

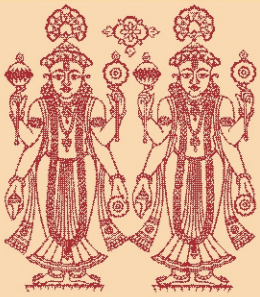

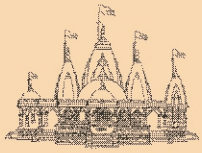

Follow Us On

/nndkalupurmandir

Praful Kharsani